क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

जनपद-विहार

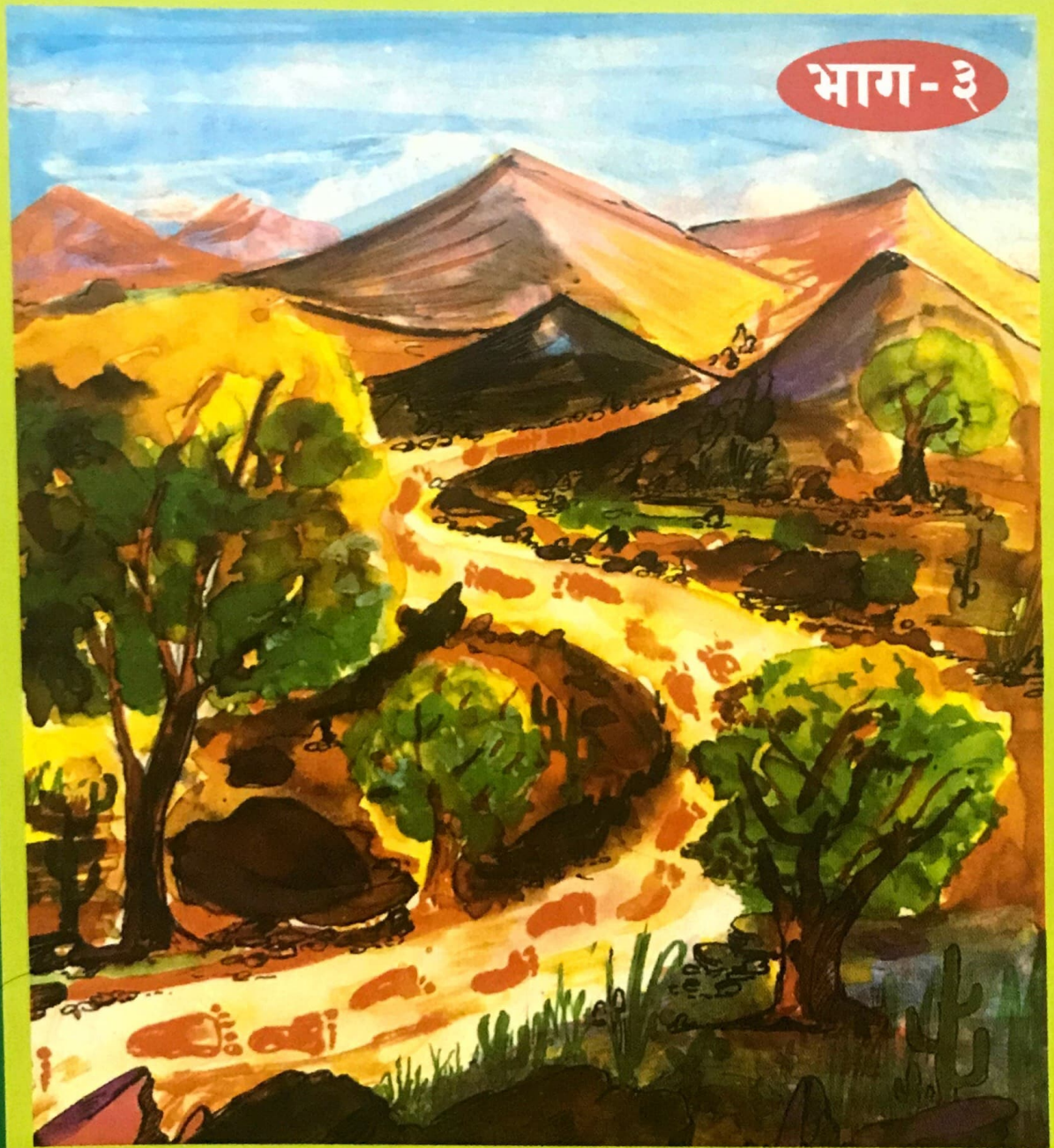

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

परिचय

आचार्य भिक्षु अध्यात्म की परम्परा के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र थे । सत्य की प्राप्ति हेतु उन्हें उस मुकाम से गुजरने में भी कोई हिचक नहीं हुई जहाँ प्रारम्भ में काँटो से बिछा पथ था, संघर्षों की छाया थी, न खाने को रोटी ही उपलब्ध थी और न ठहरने को उपयुक्त छप्पर । फिर भी उस लौह-पुरुष के चरण रुके नहीं । जिस प्रकार सोना तपकर और खरा हो जाता है, उसी प्रकार उनका उत्साह भी शतगुणित होकर निखरा । उनके इसी अदम्य उत्साह ने युग में एक अलग पहचान बनाई और हजारों-हजारों कदम उनके पदचिन्हों पर चल पड़े ।

प्रस्तुत चित्रकथा जो "क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु" श्रृंखला का तीसरा पुष्प है, उनके "जनपद-विहार" से अभिहित है । साधना के नये क्षितिज की ओर बढ़ते हुए आचार्य भिक्षु को कई खट्टे-मीठे अनुभवों से दो-चार होना पड़ा । उन्हीं संस्मरणों में से कुछ को इस चित्रकथा में पाठकों के लिए चित्रांकन के साथ संजोया गया है । इन संस्मरणों से आचार्य भिक्षु की कई विशेषताओं का दिग्दर्शन होता है । जैसे :-

१. आचार-संहिता का कड़ाई से पालन करना ।
२. सिद्धान्त प्रतिपादन की कुशलता ।
३. योग्य व्यक्तियों की परख एवं चुनाव ।
४. असंकीर्णता एवं न्याय प्रियता ।
५. संघर्ष में भी शीतलता एवं संतुलन ।
६. प्रत्युत्पन्न मति एवं विनोद प्रियता, आदि ।

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

विघ्न हरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु रो नाम ।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिन्त्या काम ॥

प्रकाशक
मित्र परिषद्
115, ए चित्तरंजन एवेन्यु, कोलकाता - 700 073
फोन : 22352481, 22357935

मुख्य प्रवृत्तियां
- वातानुकूल प्रेक्षाध्यान केन्द्र
- होमियोपेथी व शिशु चिकित्सा केन्द्र
- अस्थि चिकित्सा केन्द्र
- सिलाई - बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र
- समृद्ध पुस्तकालय
- विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति
- विशाल बर्तन भंडार
- असहायों को सहायता
- साहित्य सेवा

संपादक
मुनि उदितकुमार

संस्करण : द्वितीय
आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी वर्ष

- अभिवन्दना कर्ता -
श्रीचन्द, उम्मेदसिंह, विजयसिंह मोहोनोत
(डीडवाना)
जयग्रुप ओफ इन्डस्ट्रीज
नं 3 एवं 5, चार्ल्स केम्पबेल रोड़
कोक्स टॉउन, बेंगलोर-560 005
फोन : 25483508 / 25483908
मोबाईल : 98452 12363 / 98450 40099, 20099

मुद्रक :- श्रीं ऑफसेट प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 5699 2695 मोबाईल : 98440 06655
श्रीनिवासा प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 23356888

मूल्य : रु ४०/-

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

जनपद-विहार

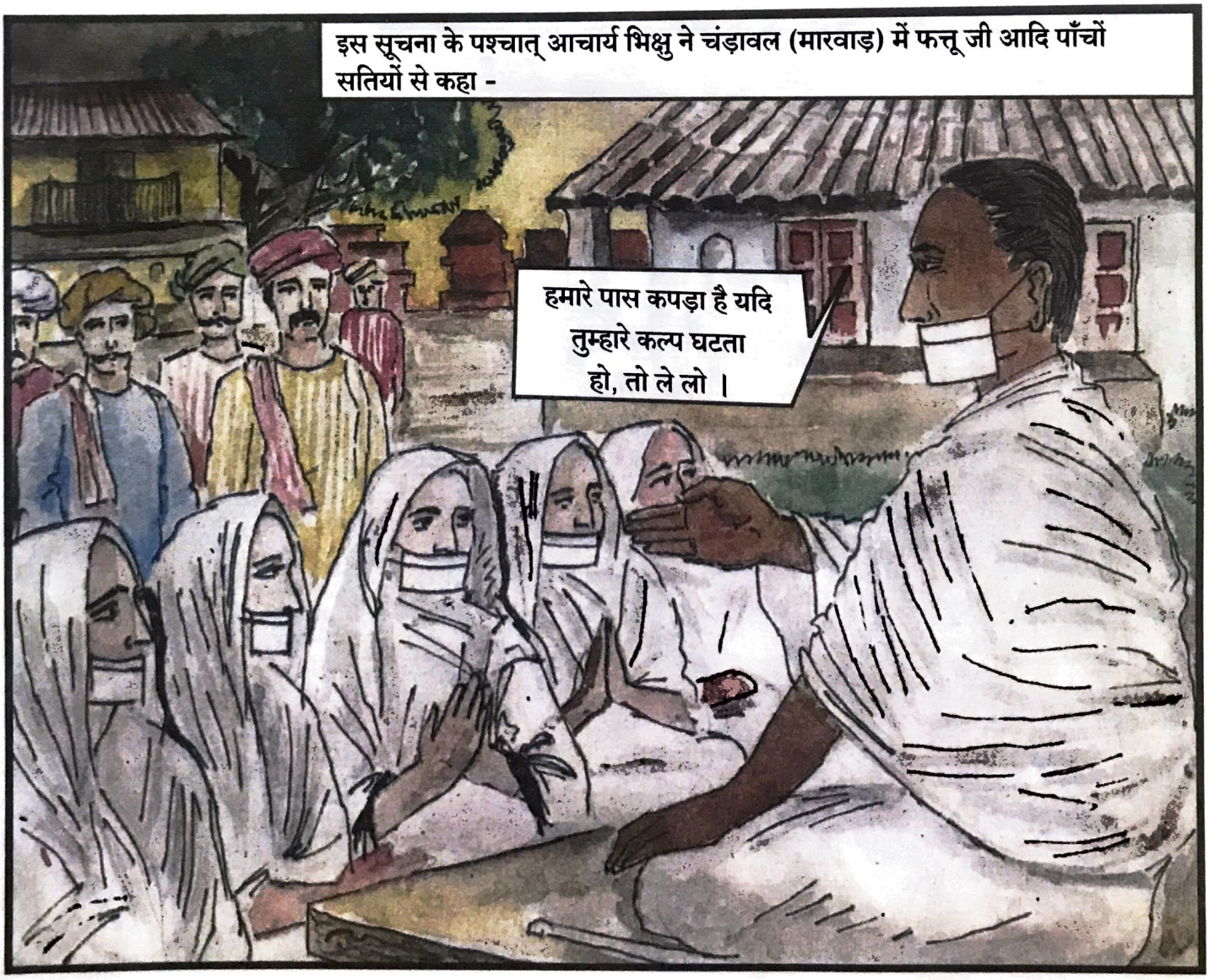

सतियों ने मर्यादा का ख्याल न करते हुए और कपड़ा ले लिया ।

फिर आचार्य भिक्षु ने सन्त अखेराम जी को स्थिति का पता लगाने हेतु आज्ञा दी ।

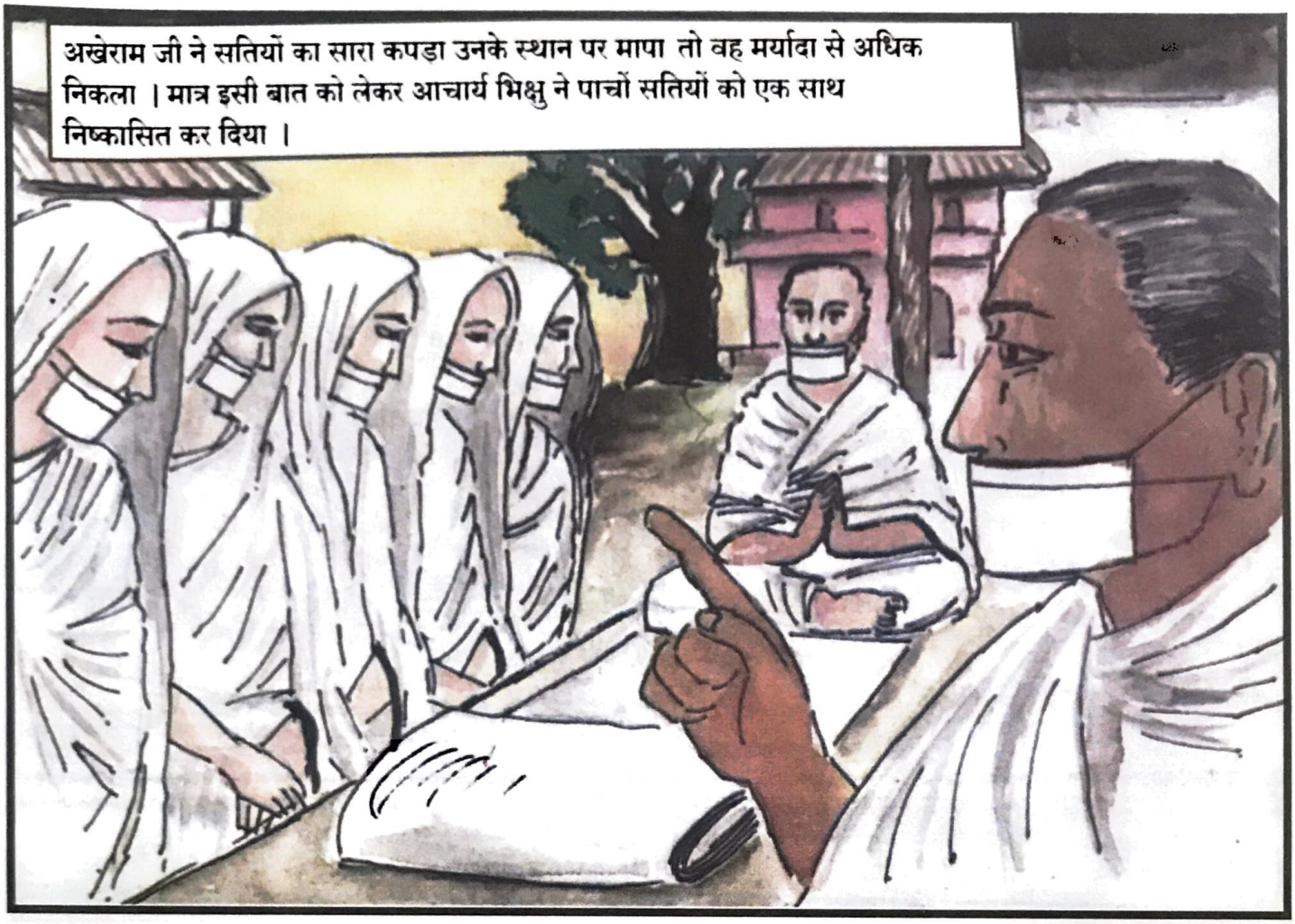
अखेराम जी ने सतियों का सारा कपड़ा उनके स्थान पर मापा तो वह मर्यादा से अधिक निकला । मात्र इसी बात को लेकर आचार्य भिक्षु ने पाचों सतियों को एक साथ निष्कासित कर दिया ।

पाली में एक बार रात्रि व्याख्यान के बाद विजयचंद जी पटवा अपने मित्र वर्धमान जी श्रीश्रीमाल के साथ आये ।

सन्त सो चुके थे, आचार्य भिक्षु से चर्चा करने लगे ; चर्चा करते-करते पूरी रात
बीत गई ।

अन्त में दोनों ने तत्व समझा । सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण कर ली ।

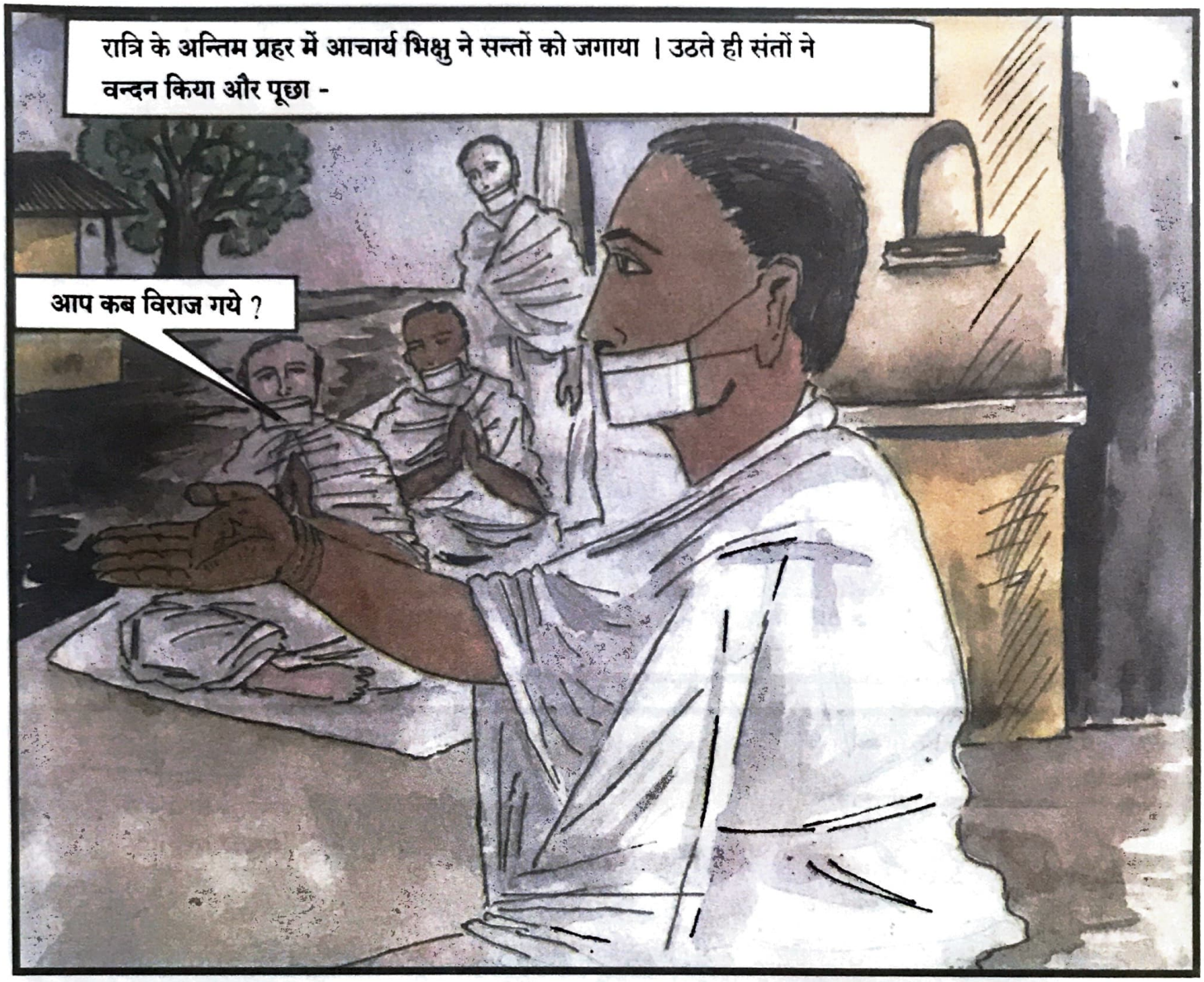
रात्रि के अन्तिम प्रहर में आचार्य भिक्षु ने सन्तों को जगाया । उठते ही संतों ने वन्दन किया और पूछा -
आप कब विराज गये ?

इस पर आचार्य भिक्षु ने कहा-
यह पूछो कि सोया कब था? जब सोया ही नहीं तो जागूंगा क्या ?

यह बात पींपाड़ की है । वहां गेवीराम नामक एक प्रभु भक्त हुए । वे गरीब लोगों को प्रेम से लापसी खिलाते थे ।

उनको आचार्य भिक्षु के विरोधियों ने भरमाया-
भीखण जी लापसी खिलाने में पाप बताते हैं ।
मैं स्वयं भीखण जी से मिलकर पूछूँगा ।

भगत पैरों में घुंघरू बाधें, हाथ में घोटा लिए भीखण जी के पास आया ।
और पूछने लगा-
महाराज ! मैं गरीबों को प्रेम से लापसी खिलाता हूँ, तो इसमें क्या हुआ ?
भगत जी ! जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा ।

भगत गेवीराम खुश होकर नाच उठा -
घोटा हवा में उछालते हुए बाजार को दौड़ गया -
वाह ! भीखण बाबा वाह ! क्या अच्छी बात बताई । जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा .....

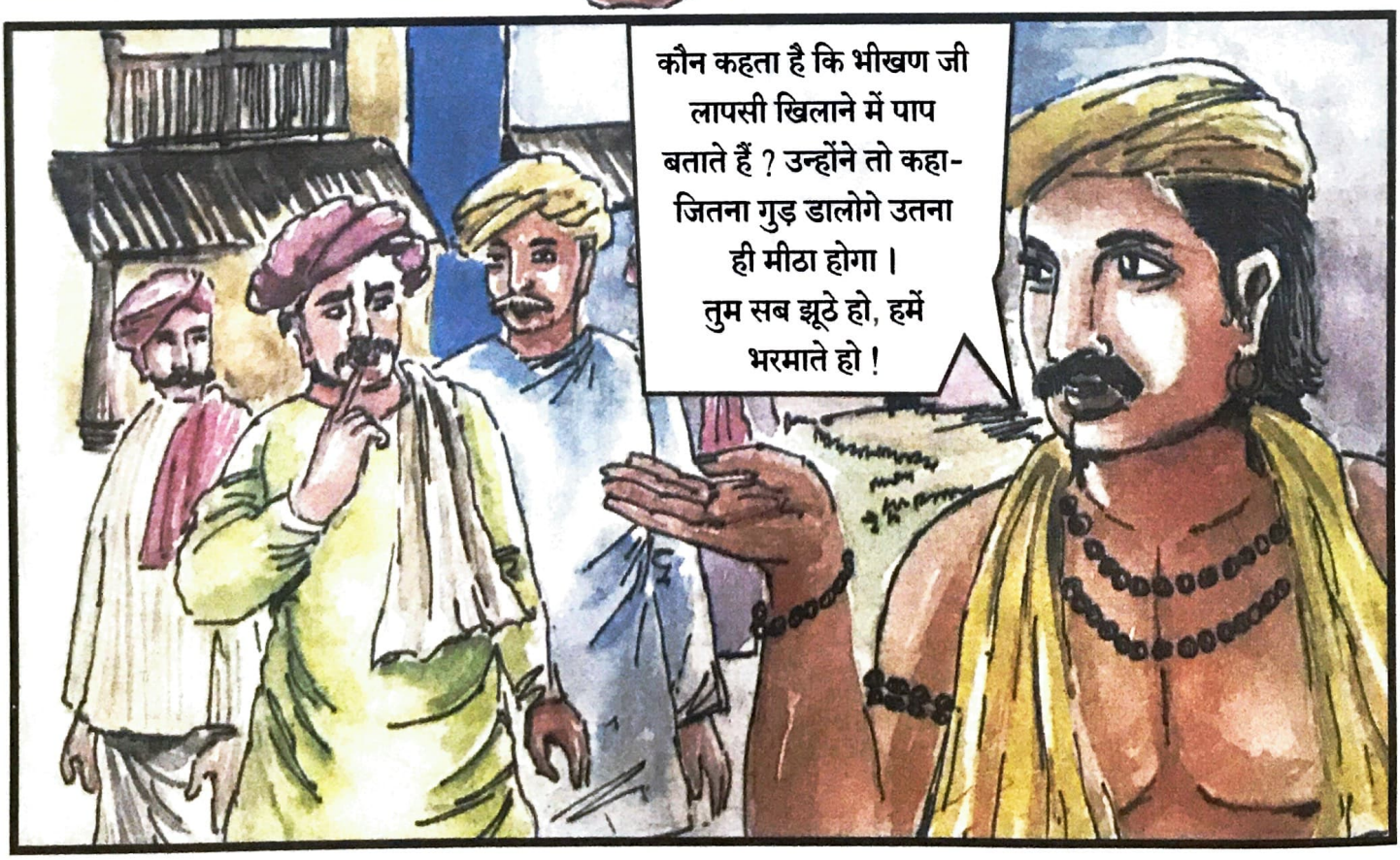
कौन कहता है कि भीखण जी लापसी खिलाने में पाप बताते हैं ? उन्होंने तो कहा- जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा । तुम सब झूठे हो, हमें भरमाते हो !

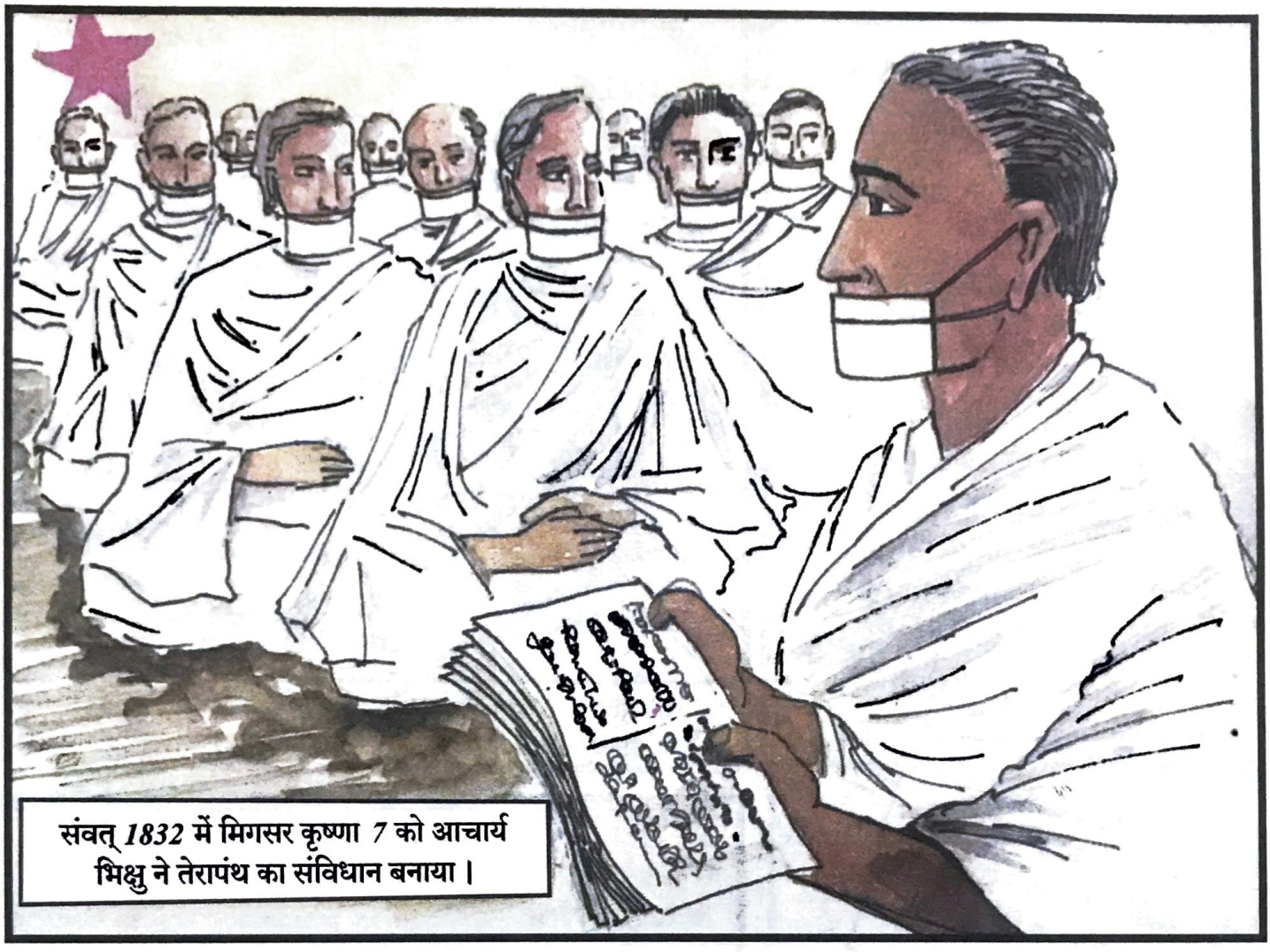
संवत् 1832 में मिगसर कृष्णा 7 को आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ का संविधान बनाया।

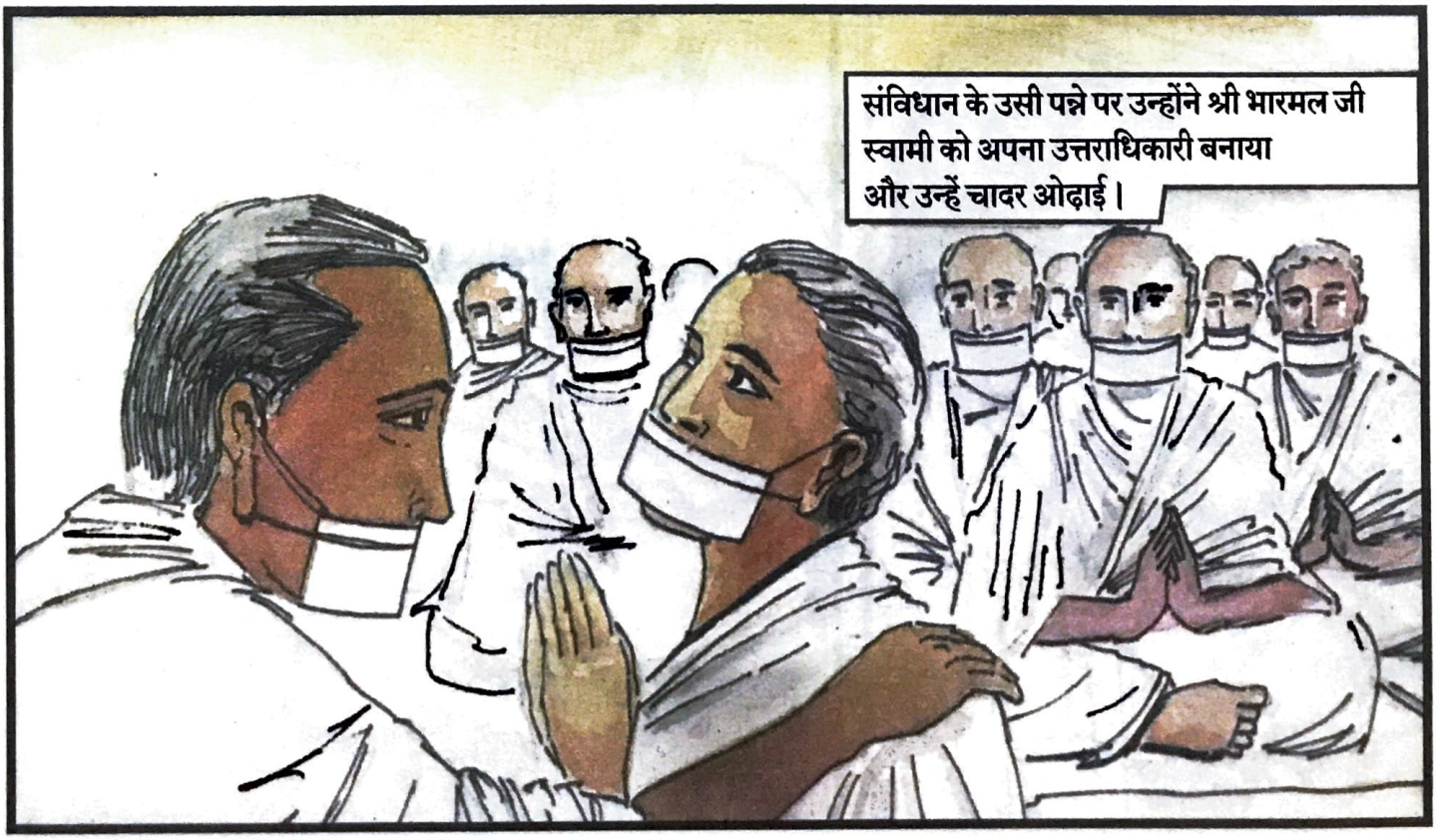
संविधान के उसी पन्ने पर उन्होंने श्री भारमल जी स्वामी को अपना उत्तराधिकारी बनाया और उन्हें चादर ओढ़ाई।

तेरापंथ के संविधान की मुख्यधारायें

1. सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
2. विहार-चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।
3. अपने शिष्य न बनायें।
4. योग्य व्यक्ति को ही दीक्षित करें दीक्षित करने पर कोई अयोग्य निकले, तो उसे गण से अलग कर दें।
5. आचार्य अपने गुरु भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी चुनें, तो सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें; आदि।

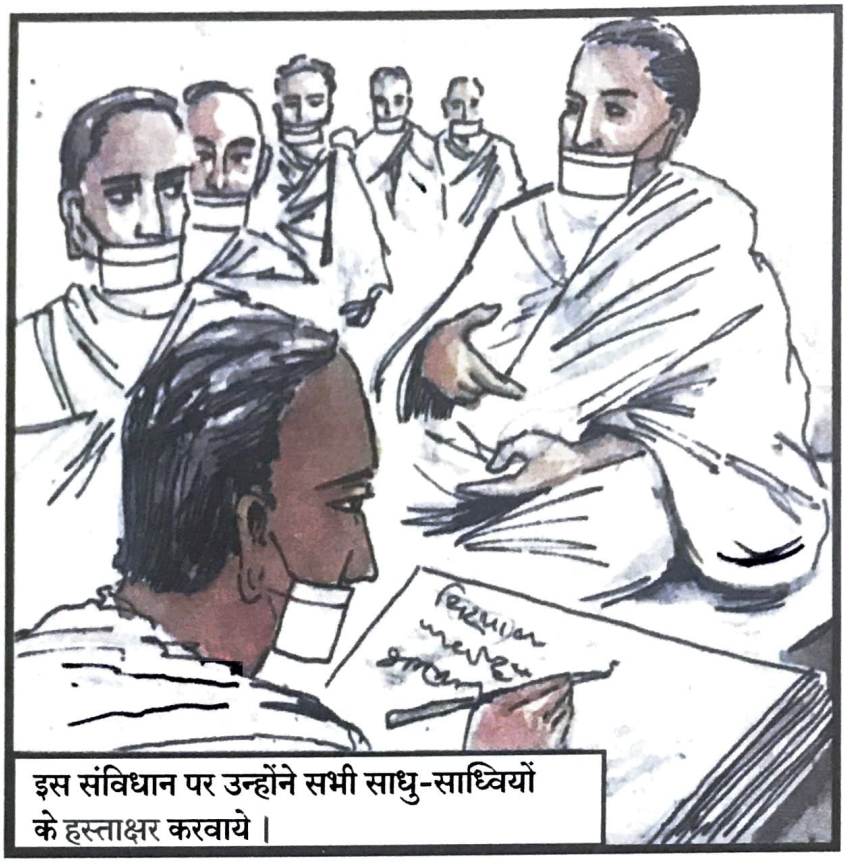

इस संविधान पर उन्होंने सभी साधु-साध्वियों के हस्ताक्षर करवाये।

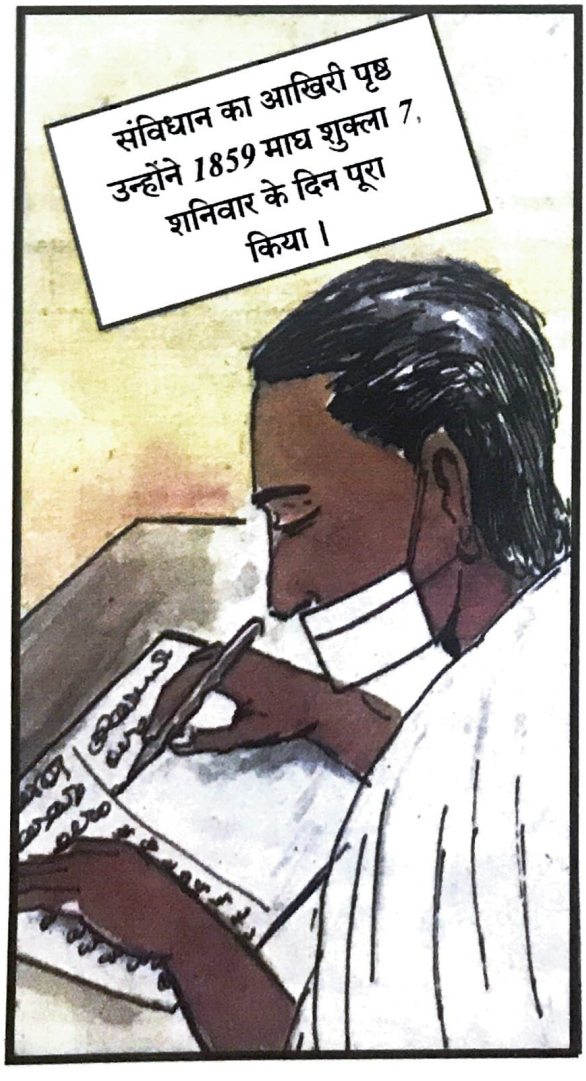

संविधान का आखिरी पृष्ठ उन्होंने 1859 माघ शुक्ला 7, शनिवार के दिन पूरा किया।

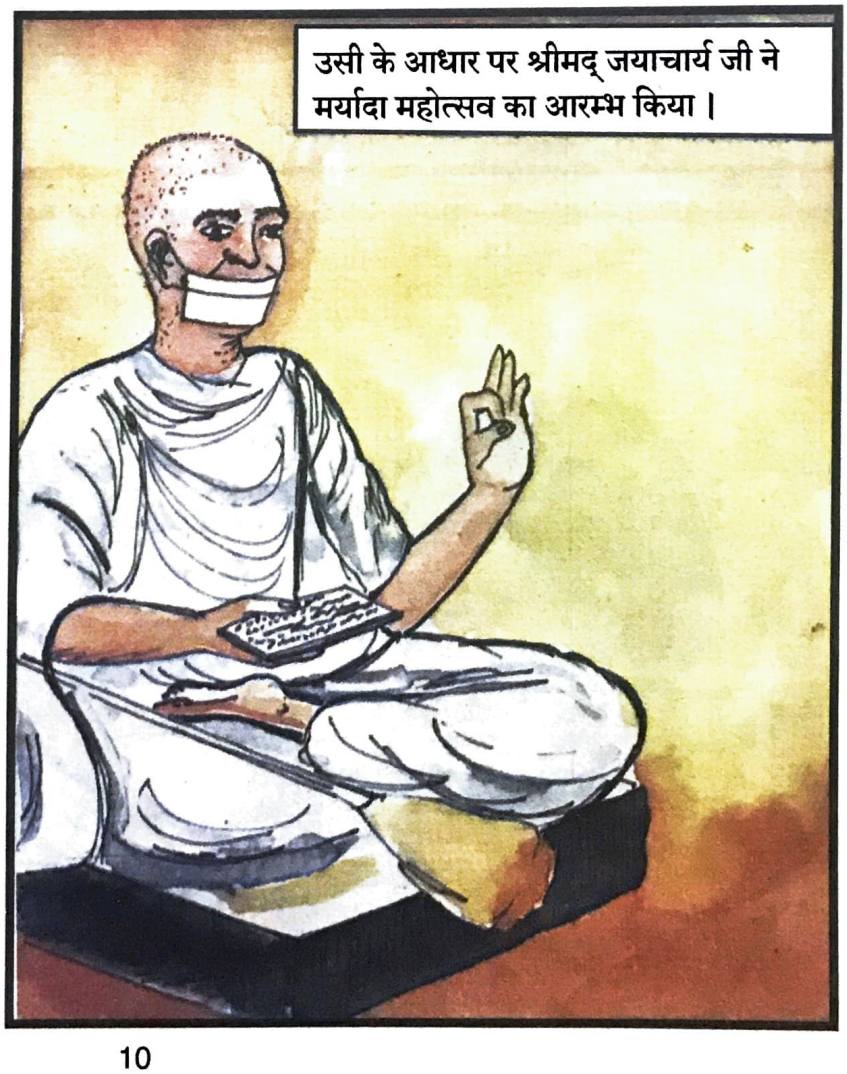

उसी के आधार पर श्रीमद् जयाचार्य जी ने मर्यादा महोत्सव का आरम्भ किया।

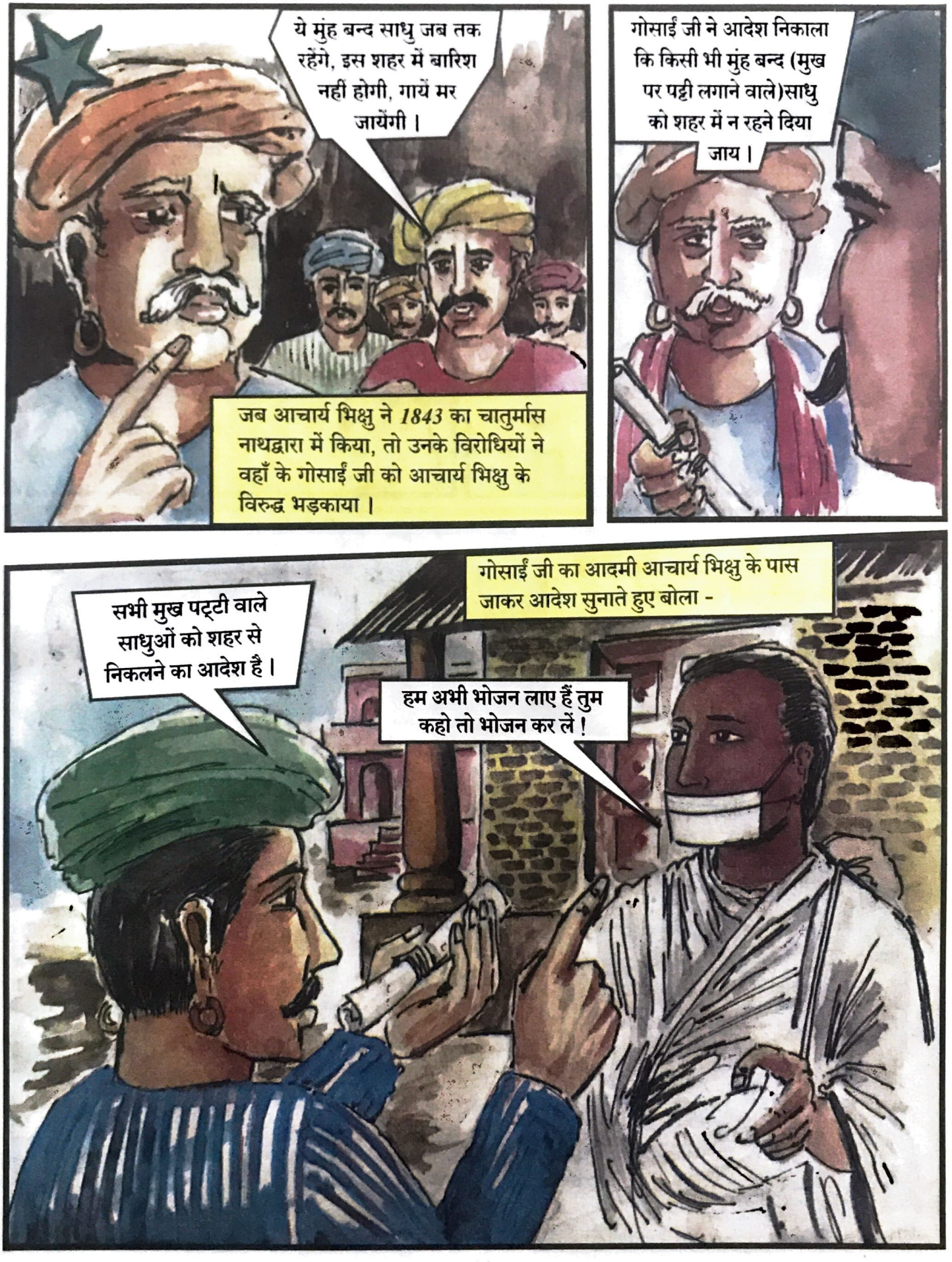
ये मुंह बन्द साधु जब तक रहेंगे, इस शहर में बारिश नहीं होगी, गायें मर जायेंगी ।
जब आचार्य भिक्षु ने 1843 का चातुर्मास नाथद्वारा में किया, तो उनके विरोधियों ने वहाँ के गोसाईं जी को आचार्य भिक्षु के विरुद्ध भड़काया ।
गोसाईं जी ने आदेश निकाला कि किसी भी मुंह बन्द (मुख पर पट्टी लगाने वाले)साधु को शहर में न रहने दिया जाय ।
गोसाईं जी का आदमी आचार्य भिक्षु के पास जाकर आदेश सुनाते हुए बोला -
सभी मुख पट्टी वाले साधुओं को शहर से निकलने का आदेश है ।
हम अभी भोजन लाए हैं तुम कहो तो भोजन कर लें !

आप आराम से भोजन कर लें, महाराज ! मैं बाहर बैठा हूँ।

संतों ! शीघ्र तैयार हो जाओ, विहार करना है । चातुर्मास में विहार करना अटपटा तो लगता है, परन्तु समत्व की साधना का यही अवसर है।

थोड़ी देर पश्चात् आचार्य भिक्षु सहित सभी संतों ने विहार किया । रास्ते में स्थानक आ गया। स्थानकवासी संतों ने आचार्य भिक्षु और उनके संतों को उपहास की दृष्टि से देखा । आचार्य भिक्षु रुके, ऊपर की ओर देखकर बोले -

सन्तों ! खमत खामणा है, हम तो विहार कर रहे हैं यहाँ रहने की गोसाईं जी की मनाही है।

अरे ! ये तो और भी मुंह बन्द हैं । इन्हें भी निकालना है । गोसाईं जी का आदेश तो सब मुंह बन्दों के लिए है । इनका तो मुझे पता ही नहीं था।

गोसाईं जी का आदमी आचार्य भिक्षु को तो गाँव के बाहर आदर के साथ पहुँचा आया ।

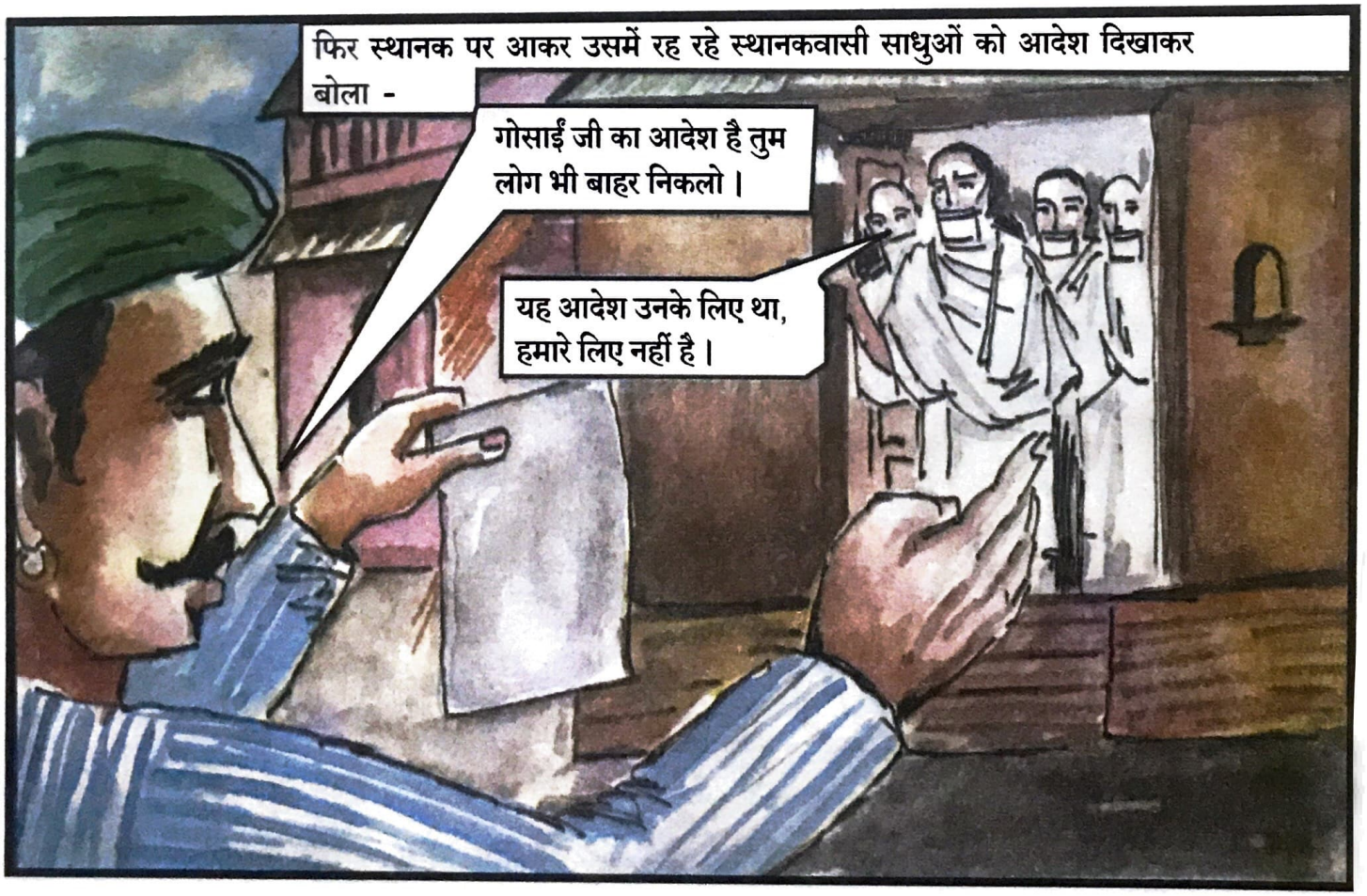
फिर स्थानक पर आकर उसमें रह रहे स्थानकवासी साधुओं को आदेश दिखाकर बोला -
गोसाईं जी का आदेश है तुम लोग भी बाहर निकलो ।
यह आदेश उनके लिए था, हमारे लिए नहीं है ।

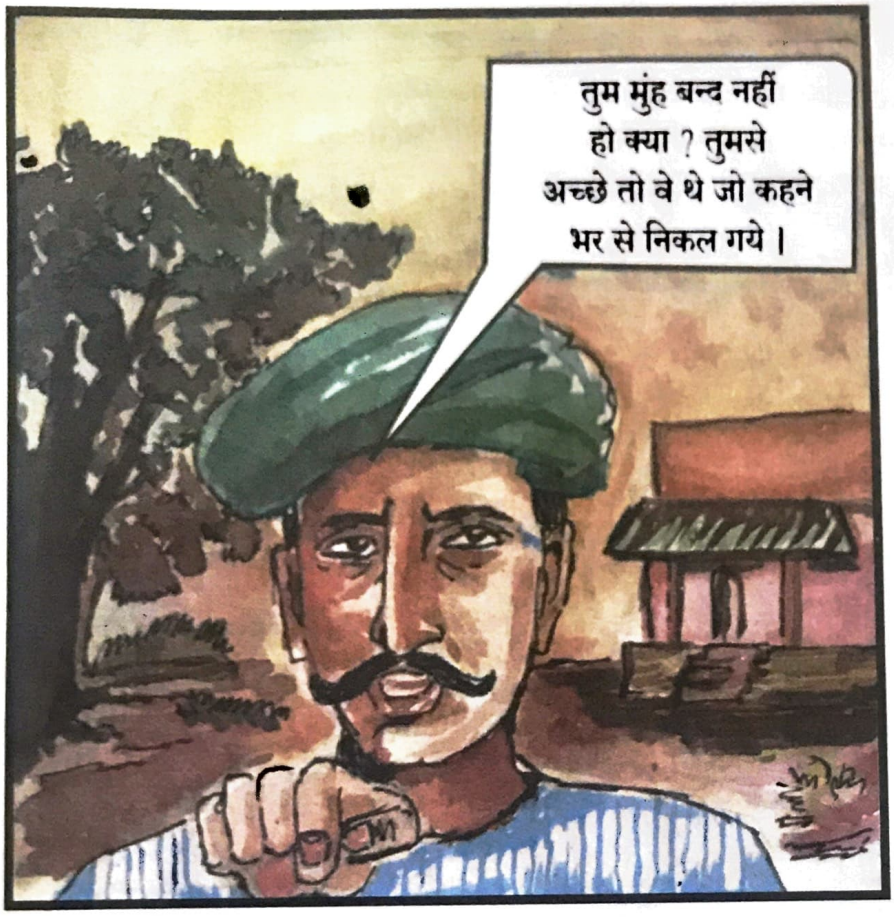

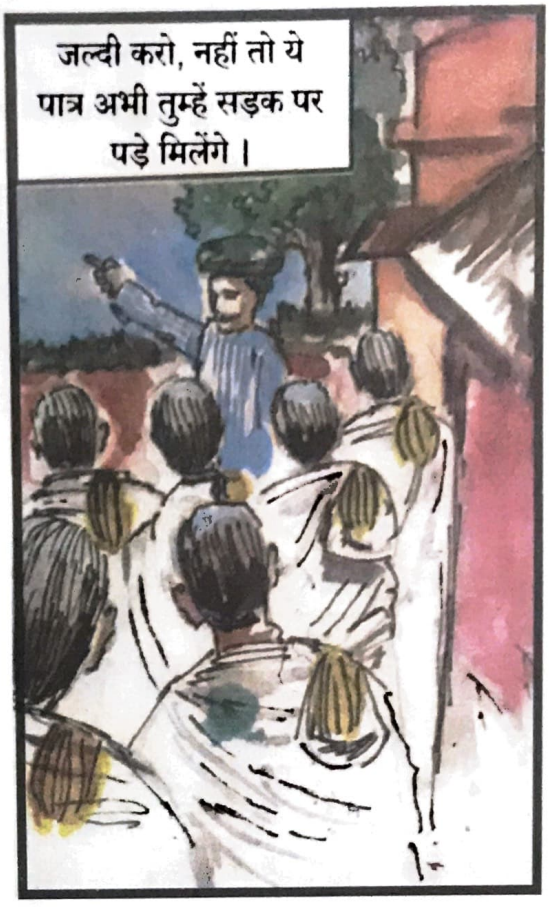

विवश होकर स्थानकवासियों को भी वहाँ से विहार करना पड़ा । वे भी उसी कोठारिया ग्राम में आये । उन्हें एक कच्चे मकान में ठहरना पड़ा, क्योंकि आचार्य भिक्षु अपने सन्तों सहित ग्राम के एकमात्र पक्के मकान में स्थान पा चुके थे ।

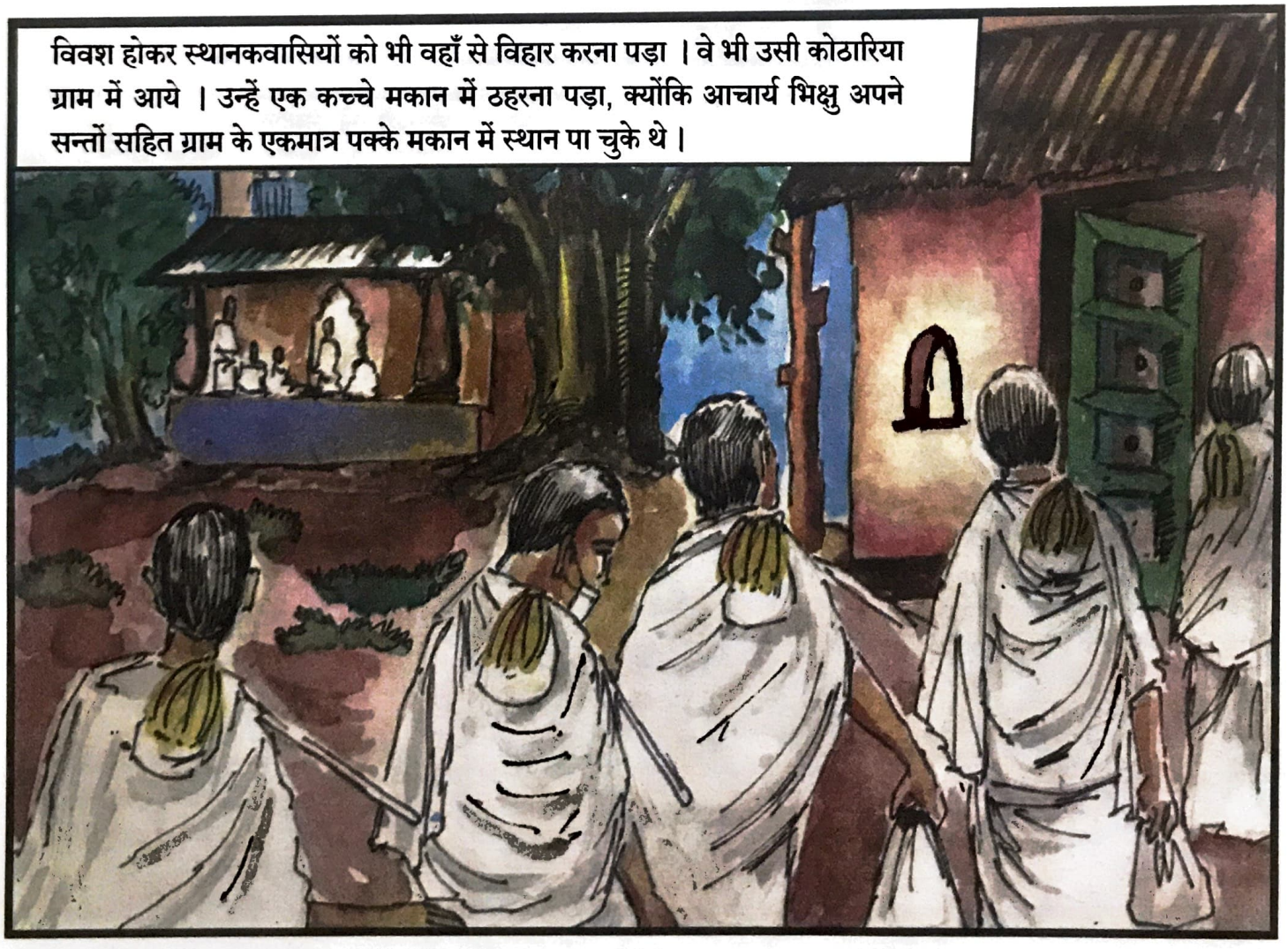

आचार्य भिक्षु ने पाली की दुकान में चातुर्मास किया।
विरोधियों ने दुकान की मालकिन को भ्रमित कर दिया।
उसने आचार्य भिक्षु से यह कह कर दुकान खाली करा दी।
तुम्हारे जैसे ही मुझे कह कर गये हैं कि ये बाद में खाली नहीं करेंगे।
आचार्य भिक्षु वहाँ से विहार कर उदियापुर बाजार में मेड़ी पर ठहर गये।

उस साल खूब बारिश हुई, और तूफान आया ।

वह दुकान रात्रि में गिर पड़ी ।

भीखण जी, वह दुकान तो गिर पड़ी
दुकान खाली कराने वाली बहन ने हम पर उपकार ही किया, अन्यथा संतो को चोट लग जाती, पात्र आदि टूट जाते ।
यह थी उनकी गुण ग्राहकता ।

कण्टालिया की बात है, आचार्य भिक्षु ने अपने बालमित्र गुलो जी गधैया से पूछा -
गुला, खेती की थी क्या ?
हां महाराज।
खर्च कितना हुआ और आय कितनी ?
दस रुपये मेड़ी की आल्मारी में पड़े रहते, तो बैलों को कष्ट और व्यर्थ में हिंसा तो नहीं होती।
खर्च दस रुपया हुआ और मूंग, मोठ, चारा मिलाकार आय भी दस रुपये की हुई।

ढूँढ़ाड़ (जयपुर) में कुछ दिगम्बर श्रावक आचार्य भिक्षु के पास आकर कहने लगे -
आप वस्त्र पहनते हो, इसलिए परीषहजयी नहीं हो।
परीषह कितने होते हैं?
बाईस।
तुम्हारे मुनि आहार करते हैं कि नहीं ? पानी पीते हैं कि नहीं ?
भूख लगने पर आहार करते हैं, प्यास लगने पर पानी पीते हैं।
तो फिर वे भी परीषहजयी कहाँ हुए ? हम भी तो उसी प्रकार शीत-ताप आदि के निवारणार्थ वस्त्र पहनते हैं।

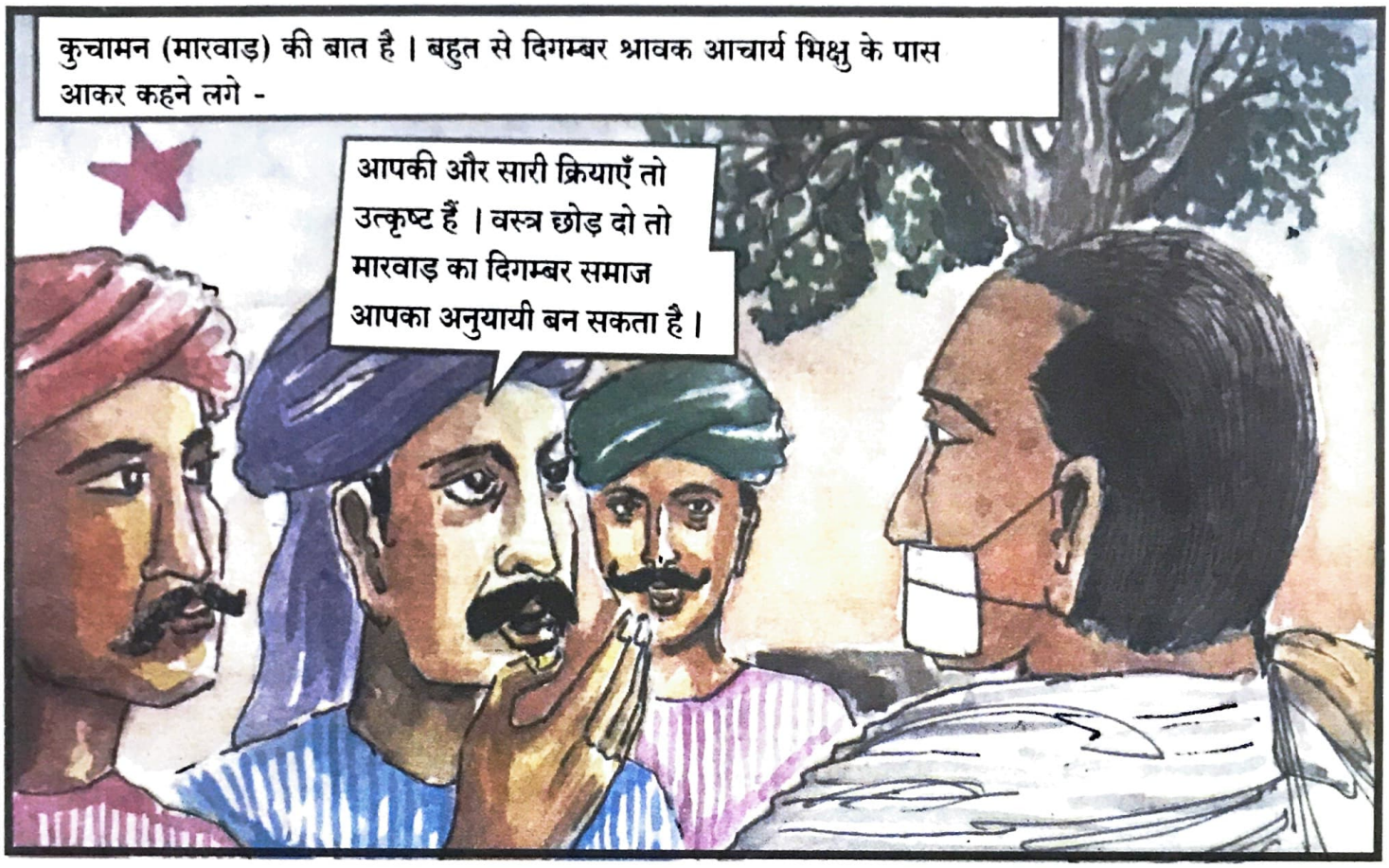
कुचामन (मारवाड़) की बात है । बहुत से दिगम्बर श्रावक आचार्य भिक्षु के पास आकर कहने लगे -
आपकी और सारी क्रियाएँ तो उत्कृष्ट हैं । वस्त्र छोड़ दो तो मारवाड़ का दिगम्बर समाज आपका अनुयायी बन सकता है ।

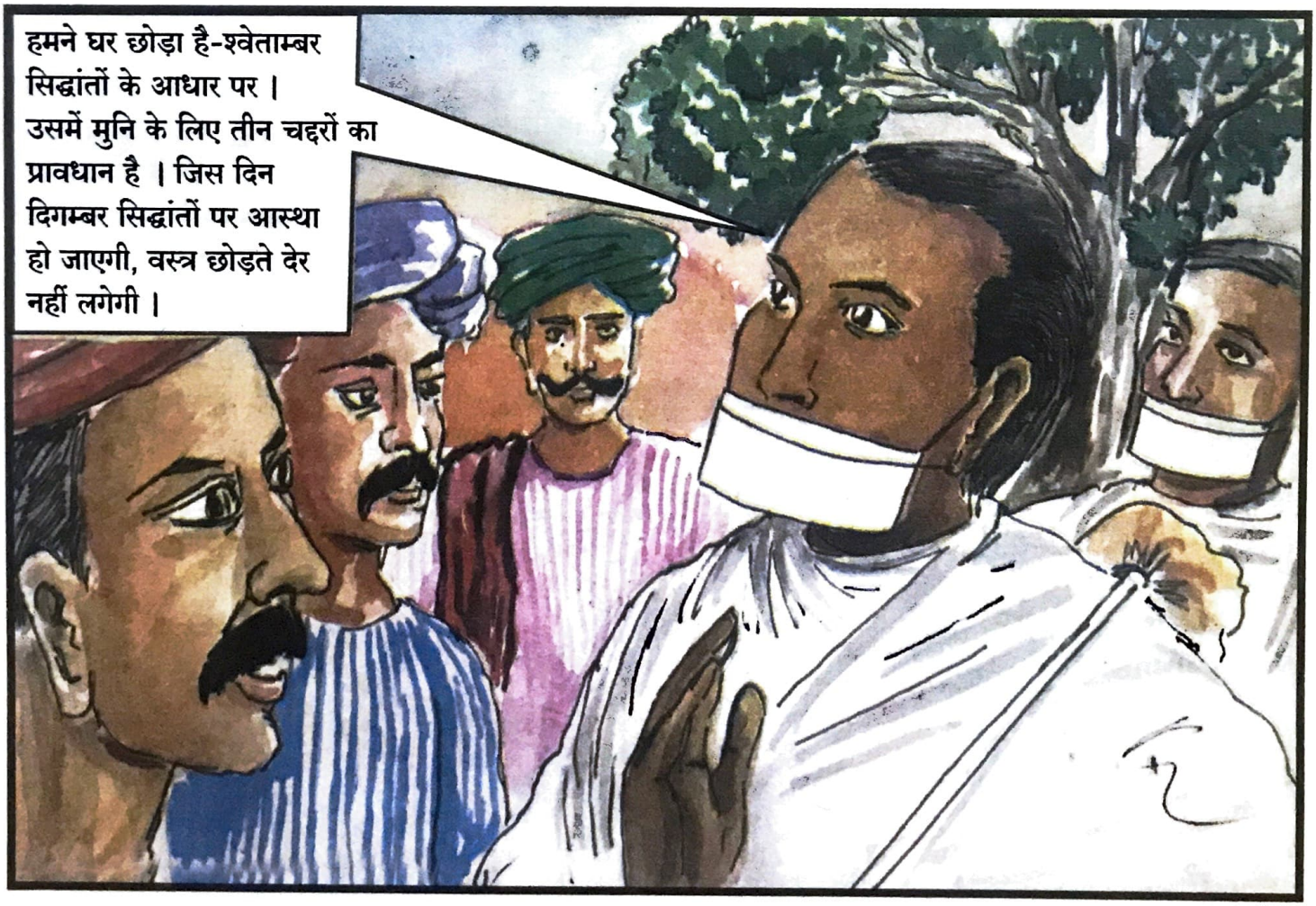
हमने घर छोड़ा है-श्वेताम्बर सिद्धांतों के आधार पर । उसमें मुनि के लिए तीन चद्दरों का प्रावधान है । जिस दिन दिगम्बर सिद्धांतों पर आस्था हो जाएगी, वस्त्र छोड़ते देर नहीं लगेगी ।

मैंने सुना है कि यहां व्यक्ति जैसा देता है अगले जन्म में उसे वैसा ही मिलता है। मुझसे यह धोवन पानी नहीं दिया जाता।
एक बार आचार्य भिक्षु काफरला (मारवाड़) पधारे। एक किसान के घर उनके कुछ सन्त गोचरी हेतु गये। किसान की पत्नी घर पर थी, घर में धोवन-पानी भी था, लेकिन वह दे नहीं रही थी।

सन्तों ने वापस आकर आचार्य भिक्षु को यह बात बताई।

फिर आचार्य भिक्षु स्वयं उसके यहाँ गये।
नहीं, मैं धोवन का पानी नहीं दे सकती। साफ पानी चाहे जितना ले जाओ। क्योंकि अगले जन्म में मुझे वही मिलेगा, जो मैं तुम्हें दूँगी।

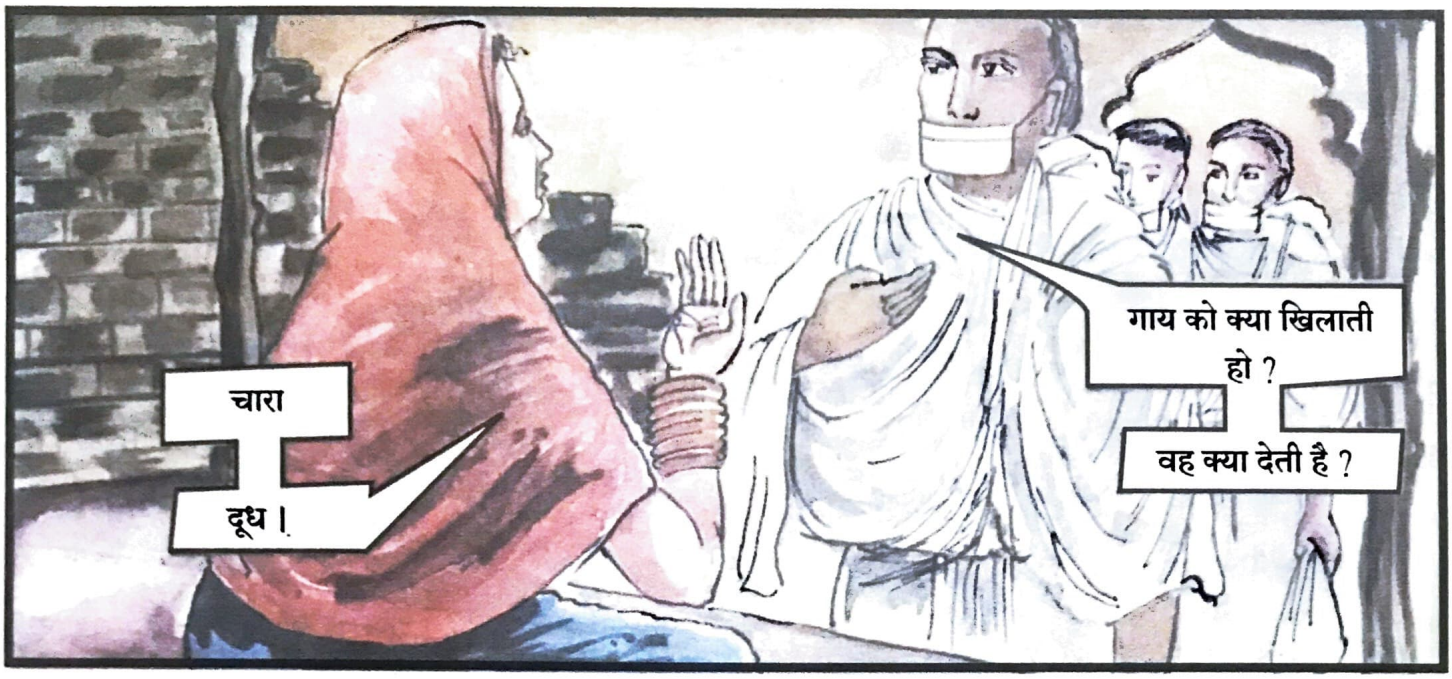

चौधरन (किसान की पत्नी) समझ गई और उसने आचार्य भिक्षु को नमन किया ।

फिर उसने सन्तों के पात्र में सहर्ष धोवन-पानी उड़ेल दिया।

एक बार आचार्य भिक्षु स्वयं एक घर में गोचरी हेतु पधारे । एक बहन खुश होकर कुछ देने लगी तभी आचार्य श्री बोले -

बहन ! तुझे हाथ धोना पड़ेगा । परन्तु कहाँ धोयेगी ? कौन से पानी से धोयेगी ?

गर्म पानी से, वहाँ नाली के पास ।
वह स्थान ऊँचा है । पानी नीचे गिरेगा तो उससे वायु-कायिक जीवों की हिंसा सम्भावित है । इसलिए आहार नहीं ले सकते ।
आप अपना भोजन ले लो, मैं क्या करती हूँ इसकी चिंता क्यों करते हो ? मैं गृहस्थ हूँ । परम्परा कैसे छोड़ूँ ?
और आचार्य भिक्षु बिना कुछ लिए वापस मुड़ गये ।
बहन ! सपापकारी परंपरा तू नहीं छोड़ सकती, तो मेरी क्रिया तो निष्पापकारी है । मैं उसे कैसे छोड़ दूँ ?

केलवा की एक बहन बार-बार दीक्षा लेने की बात करती ।
आचार्य भिक्षु के यहाँ पधारने पर मैं दीक्षा लूंगी ।

एक बार आचार्य भिक्षु केलवा पधारे तो बहन को लगा कि अब तो दीक्षा लेनी ही पड़ेगी ।

इस भय से उसे ज्वर चढ़ आया ।

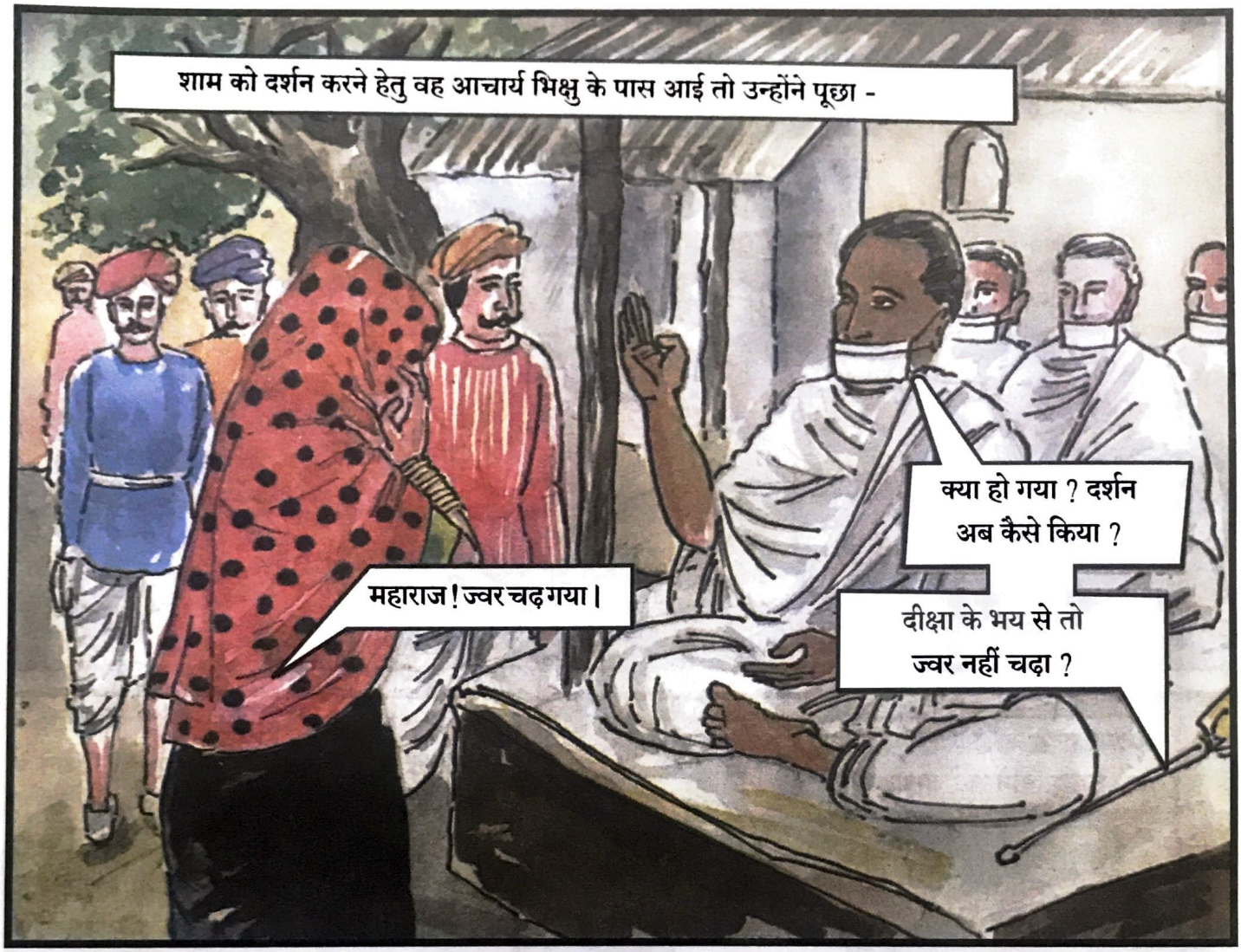
शाम को दर्शन करने हेतु वह आचार्य भिक्षु के पास आई तो उन्होंने पूछा -
क्या हो गया ? दर्शन अब कैसे किया ?
महाराज ! ज्वर चढ़ गया ।
दीक्षा के भय से तो ज्वर नहीं चढ़ा ?

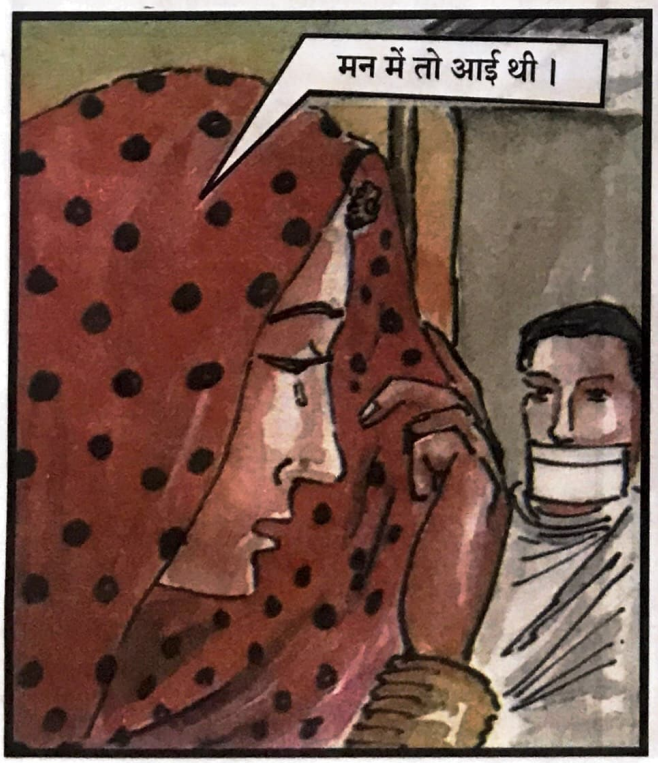
मन में तो आई थी ।

ऐसे डरने वाले को दीक्षा नहीं आ सकती ।

खेरवा के चतरोजी शाह ने एक दिन आचार्य भिक्षु से कहा -
महाराज ! मन करता है मैं भी दीक्षा लूँ ।
तुम्हारा हृदय कमजोर है । पत्नी आदि के रोने पर कहीं तुम भी रोने लग जाओ, तो .....
आंसू तो आ सकते हैं ।
तुम्हीं सोचो कोई युवक पत्नी को लेने ससुराल गया । रवाना होते समय पत्नी रोने लगी, क्योंकि मां-बाप से बिछुड़ रही थी । अब उसे रोते देख युवक भी रोने लग जाये तो !! दीक्षा लेते समय परिवार का रोना तो मोहावेश में होता है, लेकिन यदि दीक्षार्थी ही रोने लग जाये तो दीक्षा की मखौल हो जाती है ।

कण्टालिया का एक भाई आचार्य भिक्षु से कहा करता था कि दीक्षा लेने का मेरा विचार तो है परन्तु माँ से विशेष मोह होने के कारण उनके रहते दीक्षा लेना कठिन है ।

कुछ दिन बाद माँ का देहान्त हो गया ।

कुछ समय बाद आचार्य भिक्षु कन्टालिया पधारे । उन्होंने उस भाई से पूछा -
मगरे में व्यवसाय करता हूँ । वहाँ की मेरणियों (आदिवासी स्त्रियों) से मोह हो गया है ।
अब क्या चिंतन है ? माँ की अंतराय तो दूर हो गई ।

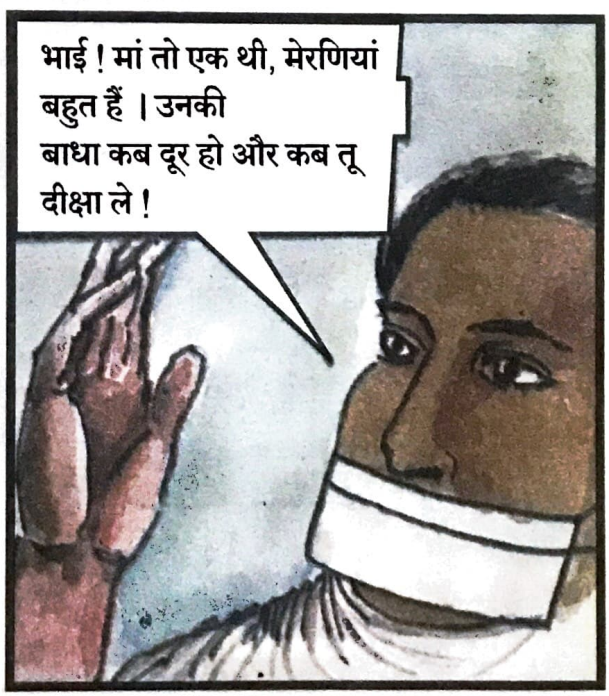
भाई ! मां तो एक थी, मेरणियां बहुत हैं । उनकी बाधा कब दूर हो और कब तू दीक्षा ले !

पादू में एक भाई ने आचार्य भिक्षु से शिकायत की कि मुनि हेम जी की चादर परिमाण से अधिक लम्बी है।

आचार्य श्री ने उसी क्षण मुनि हेम जी की चादर मंगवाई और उसे नापा तो वह परिमाण के अनुरूप निकली।

फिर उन्होंने शिकायत करने वाले भाई से कहा-
हम कोई मूर्ख थोड़े ही हैं, जो चार अंगुल कपड़े के लिए अपना चारित्र गवांयेंगे ?

विहार के समय ऐसा हठ फिर कभी न करना ठीक है आज तो हम रह जाते हैं ।
आचार्य भिक्षु एक बार सिरियारी से विहार करने लगे । साम जी भण्डारी ने पैरों में पगड़ी रखकर उन्हें वहीं रहने की प्रार्थना की, तब आचार्य भिक्षु ने कहा -

केलवा के ठाकुर मोखमसिंह जी ने एक बार आचार्य भिक्षु से पूछा -
गाँव-गाँव से आपको प्रार्थना आती है । जब भी आप आते हैं तब बड़ी खुशी होती है । ऐसा क्यों ?

विदेश में रहने वाले पति का समाचार लाने वाला कासीद कितना प्रिय लगता है ?

बहुत अधिक ।
हम भी भगवान के घर के कासीद हैं । भगवान की कही बात बताते हैं इसलिए अच्छे लगते हैं ।

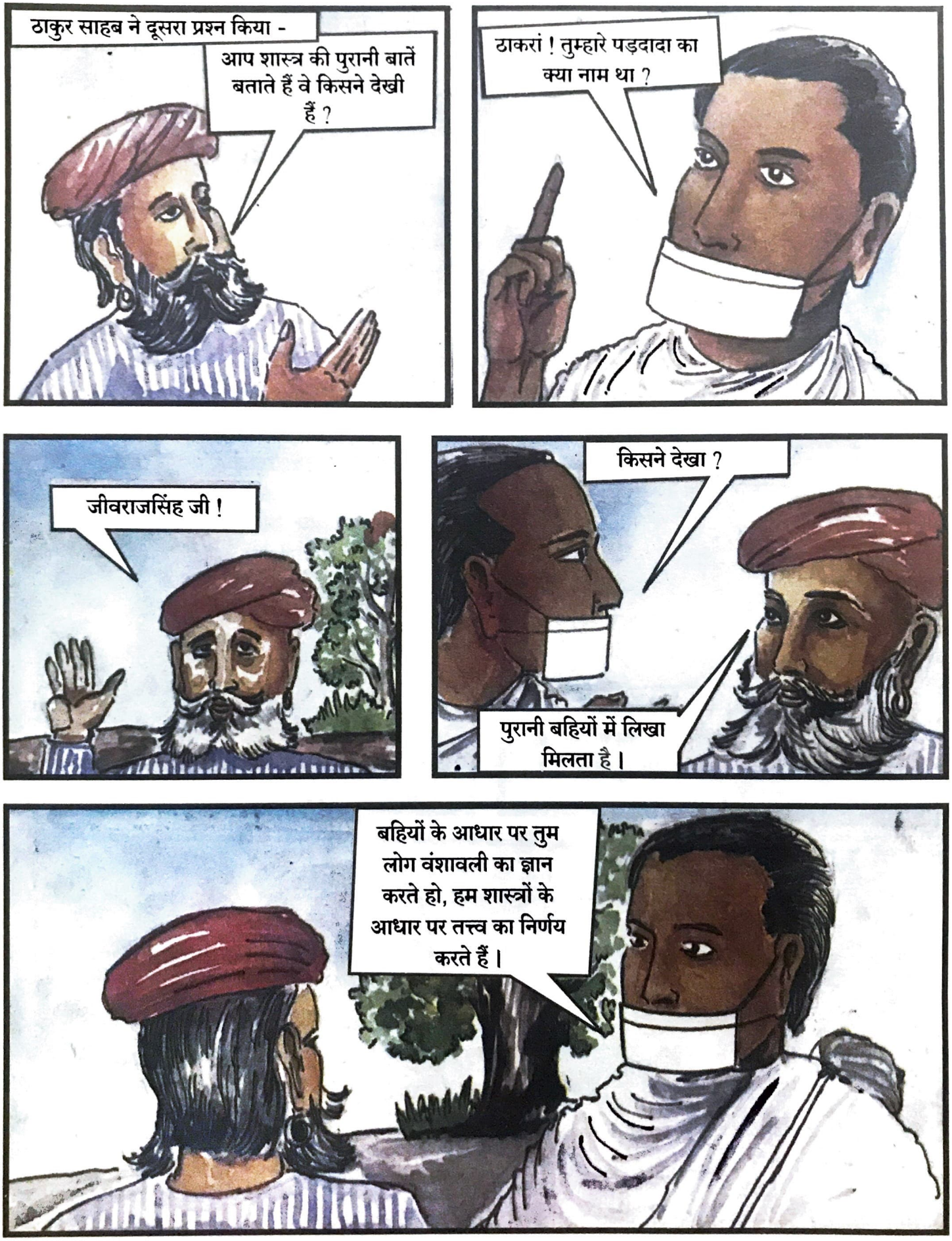
ठाकुर साहब ने दूसरा प्रश्न किया -
आप शास्त्र की पुरानी बातें बताते हैं वे किसने देखी हैं ?
ठाकरां ! तुम्हारे पड़दादा का क्या नाम था ?
जीवराजसिंह जी !
किसने देखा ?
पुरानी बहियों में लिखा मिलता है ।
बहियों के आधार पर तुम लोग वंशावली का ज्ञान करते हो, हम शास्त्रों के आधार पर तत्त्व का निर्णय करते हैं ।

पाली में बावेचा (ओसवाल)जाति का एक समृद्ध परिवार रहता था । शहर में उनका भारी दबदबा था लेकिन वे लोग तेरापंथ के विरोध में अगुआ की भूमिका निभाते थे ।

एक बार एक बावेचा भाई ने ब्राह्मणों से कहा-
अब तुम्हें हम कुछ नहीं देंगे । भीखण जी इसमें पाप बताते हैं ।

ब्राह्मण लोग आचार्य भिक्षु के पास आये और बोले-
आपके मना करने से बावेचा ने हमें दान देना बन्द कर दिया है ।
मना करने की तो बात ही क्या ? यदि बावेचा पांच रुपये भी देते हैं तो भी मेरी मनाही नहीं है ।

खुशी-खुशी सभी ब्राह्मण
बावेचा की दुकान पर आये
और कहने लगा -
बाबा ने पांच रुपयों का
आदेश दिया है ।
लाओ, दो, पांच रुपये ।

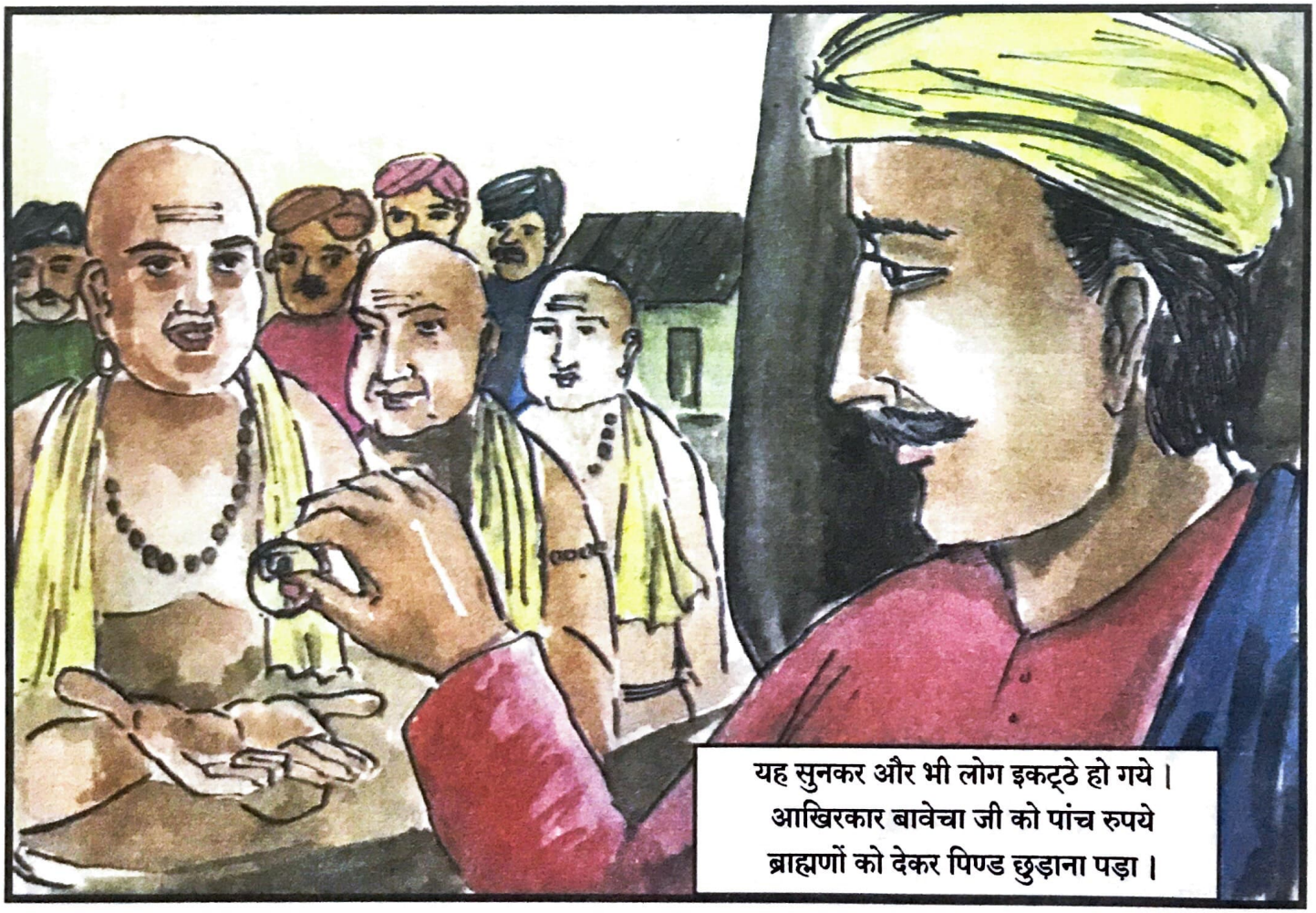
यह सुनकर और भी लोग इकट्ठे हो गये ।
आखिरकार बावेचा जी को पांच रुपये
ब्राह्मणों को देकर पिण्ड छुड़ाना पड़ा ।

पींपाड़ में आचार्य भिक्षु एक बार गोचरी हेतु गये । वहां एक विधवा बहन कुछ औरतों से बतिया रही थी ।

उसने भीखण जी को गुरु बनाया तो उसका पति मर गया ।

बहन ! तुम्हारी उम्र भी छोटी है और भीखण जी की निन्दा भी करती है । तू विधवा कैसे हो गई ?

अरे ! भीखण जी यही हैं ।

बोलने वाली युवती शर्मिन्दा होकर घर की तरफ भाग गयी ।

बिलाड़ा (मारवाड़) में जब आचार्य भिक्षु पधारे, तो उनके विरोधियों ने उन्हें भिक्षा देने वाले पर ११ सामायिक का दण्ड बांधा। आचार्य भिक्षु किसी भी घर में भिक्षा के लिए पूछते तो उन्हें उत्तर मिलता -
हम स्थानक में सामायिक करते हैं।

... और कहीं से ऐसा जवाब मिलता -
मेरी ननद स्थानक में सामायिक कर रही है तुम्हें भिक्षा देने से उसकी सामायिक खोटी हो जायेगी।

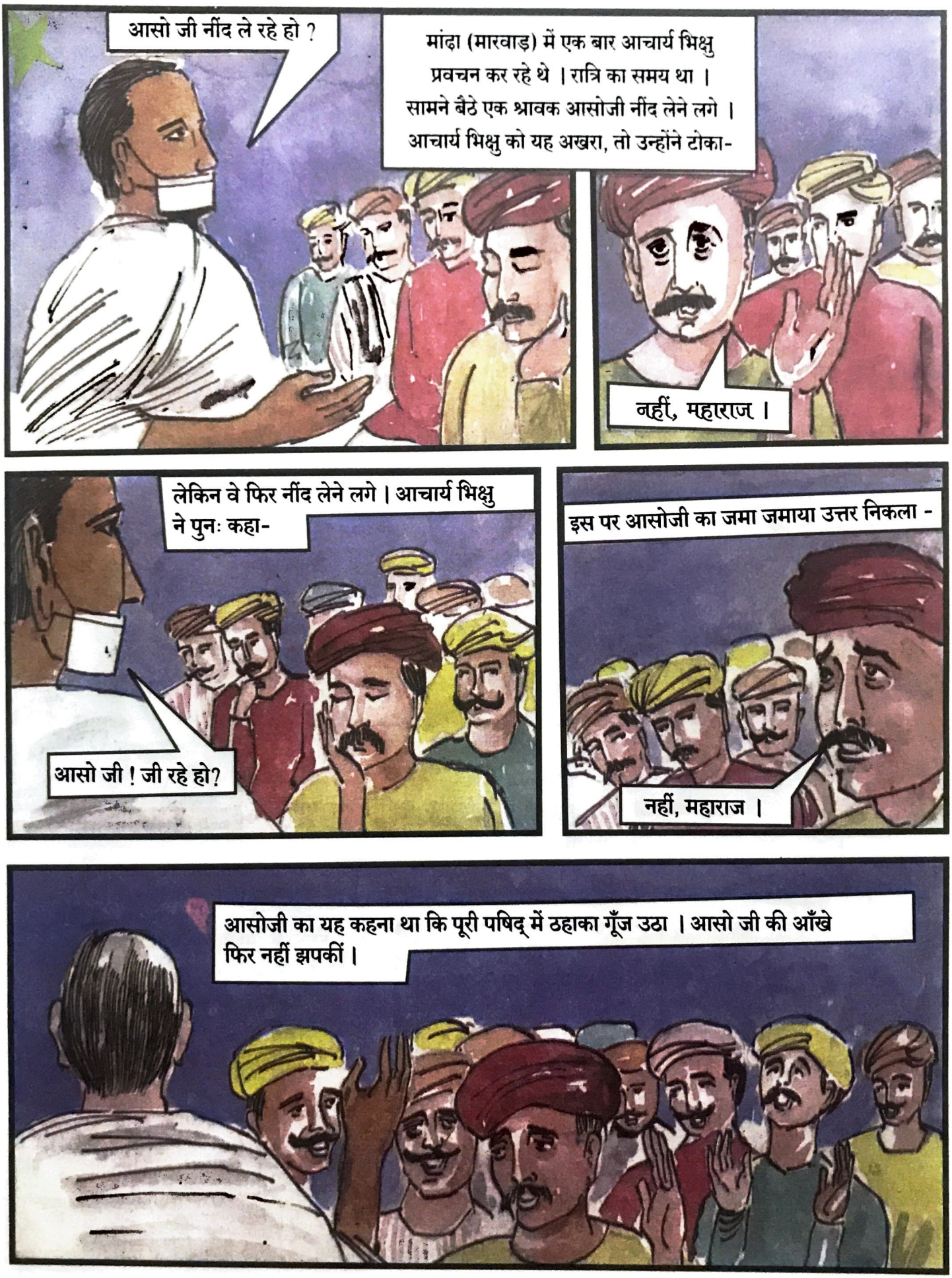
आसो जी नींद ले रहे हो ?
मांढा (मारवाड़) में एक बार आचार्य भिक्षु प्रवचन कर रहे थे । रात्रि का समय था । सामने बैठे एक श्रावक आसोजी नींद लेने लगे । आचार्य भिक्षु को यह अखरा, तो उन्होंने टोका-
नहीं, महाराज ।
लेकिन वे फिर नींद लेने लगे । आचार्य भिक्षु ने पुनः कहा-
आसो जी ! जी रहे हो?
इस पर आसोजी का जमा जमाया उत्तर निकला -
नहीं, महाराज ।
आसोजी का यह कहना था कि पूरी पषिद् में ठहाका गूँज उठा । आसो जी की आँखे फिर नहीं झपकीं ।

हम पैसे-टके नहीं लेते।
आचार्य भिक्षु दुंढाड़ (जयपुर राज्य) के ग्राम में पधारे तो वहाँ के ठाकुर साहब ने आकर दो पैसे पैरों में रख कर दिये।
आप तो मोहर-अशर्फियों के लायक हैं, लेकिन हमारी उतनी सामर्थ्य कहाँ ? फिर कभी पधारेंगे तो रूपया भेंट करुँगा।
चौथमल जी बोहरा की पाली में एक कपड़े की दुकान थी। आचार्य भिक्षु का वहीं चातुर्मास था। मिगसर बद १ को आचार्य भिक्षु उनकी दुकान की तरफ गये। तो उन्होंने उन्हें 'बासती' 'रेजा' वस्त्रदान में दिए।
फिर पूछा-
मैं आपको असाधु मानता हूँ। आपको वस्त्र देने से मुझे क्या होगा ?
किसी ने मिश्री को जहर समझ कर खा लिया, तो क्या वह मर जायेगा ?

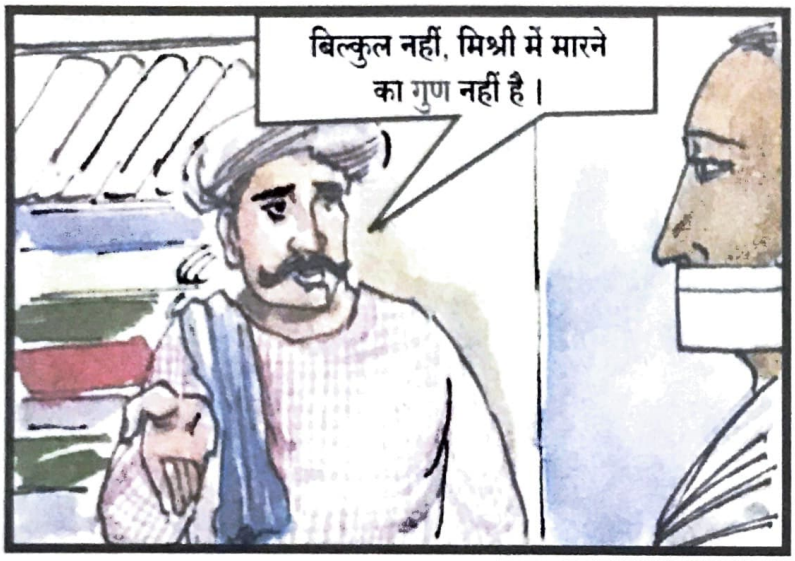
बिल्कुल नहीं, मिश्री में मारने का गुण नहीं है ।

उसी प्रकार हम साधु हैं । यदि हमें कोई असाधु समझे, तो उसका अज्ञान है । मुनि को देने में सदैव धर्म है ।

पर्युषण में पाली में बावेचा जी की अगवानी में इन्द्र ध्वज निकाला गया । आचार्य भिक्षु के सामने वे जमकर नाचने लगे । कुछ श्रावकों ने इसका प्रतिरोध करना चाहा -

पहले देवता भगवान के समक्ष नृत्य किया करते थे । आजकल ये प्रतिमा को भगवान मानते हैं इसलिए उसके सामने नाचते हैं या फिर भगवान के सन्तों के सामने नाचते हैं ।

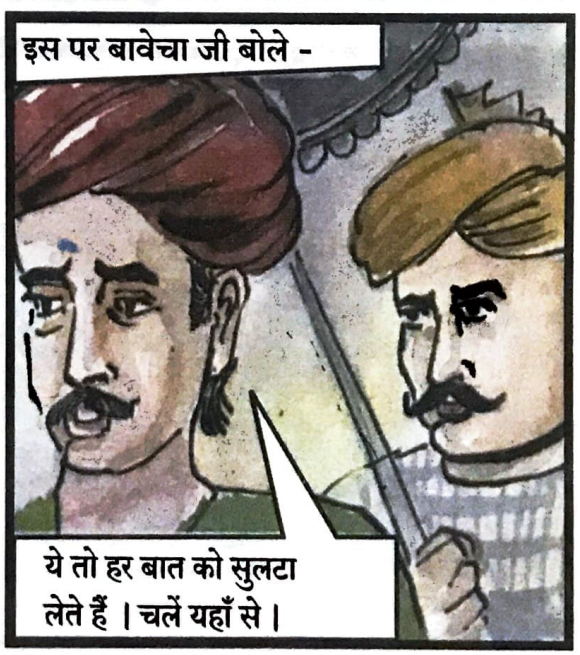
इस पर बावेचा जी बोले -
ये तो हर बात को सुलटा लेते हैं । चलें यहाँ से ।

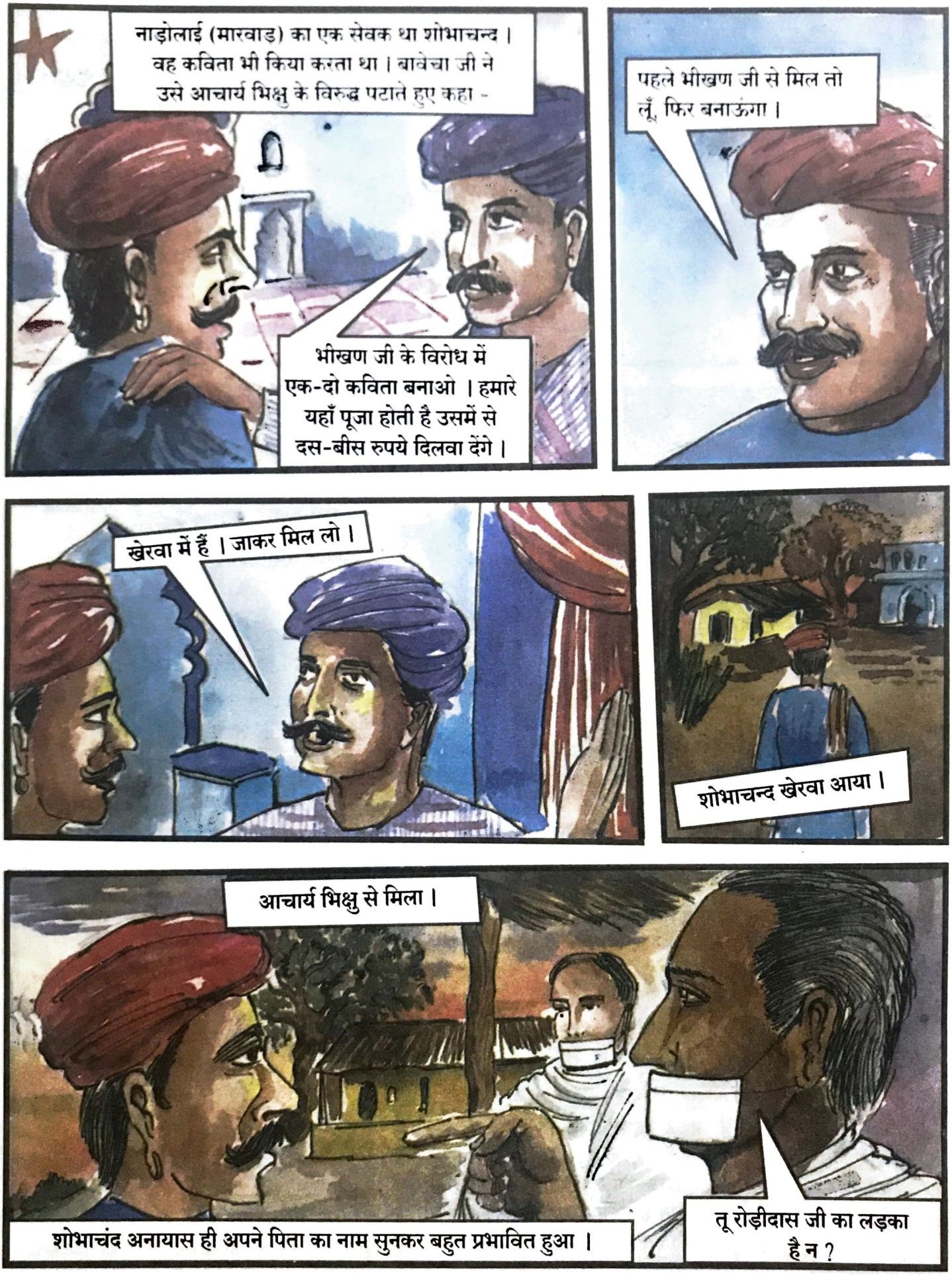
नाड़ोलाई (मारवाड़) का एक सेवक था शोभाचन्द । वह कविता भी किया करता था । बावेचा जी ने उसे आचार्य भिक्षु के विरुद्ध पटाते हुए कहा -
भीखण जी के विरोध में एक-दो कविता बनाओ । हमारे यहाँ पूजा होती है उसमें से दस-बीस रुपये दिलवा देंगे ।
पहले भीखण जी से मिल तो लूँ, फिर बनाऊंगा ।
खेरवा में हैं । जाकर मिल लो ।
शोभाचन्द खेरवा आया ।
आचार्य भिक्षु से मिला ।
शोभाचंद अनायास ही अपने पिता का नाम सुनकर बहुत प्रभावित हुआ ।
तू रोड़ीदास जी का लड़का है न ?

आप भगवान को उत्थापते हो, यह अच्छी बात नहीं है ।
भगवान की ही वाणी पर तो घर छोड़ा, संयम लिया, फिर उन्हें उत्थापने का प्रश्न ही नहीं ।

आप मन्दिर उत्थापते हो ?

हजारों मन वजनी मन्दिर को भला हम कैसे उत्थाप सकते हैं ?

आप प्रतिमा को उत्थापते हो, पत्थर की कहते हो ।

हमें असत्य बोलने का त्याग है । प्रतिमा सोने की हो तो हम सोने की कह देते हैं,
चांदी की हो तो हम चांदी की कह देते हैं । यदि प्रतिमा पाषाण की हुई तो हम उसे वैसा ही कहेंगे ।

यह सुनकर शोभाचन्द बहुत प्रसन्न हुआ । उसने सोचा - ऐसे सन्तों के बारे में अवगुण कहना ही पाप है । उसने फटाफट कवित्त जोड़े और पाली आया ।

शोभाचन्द जो कवित्त जोड़े वे इस प्रकार थे -

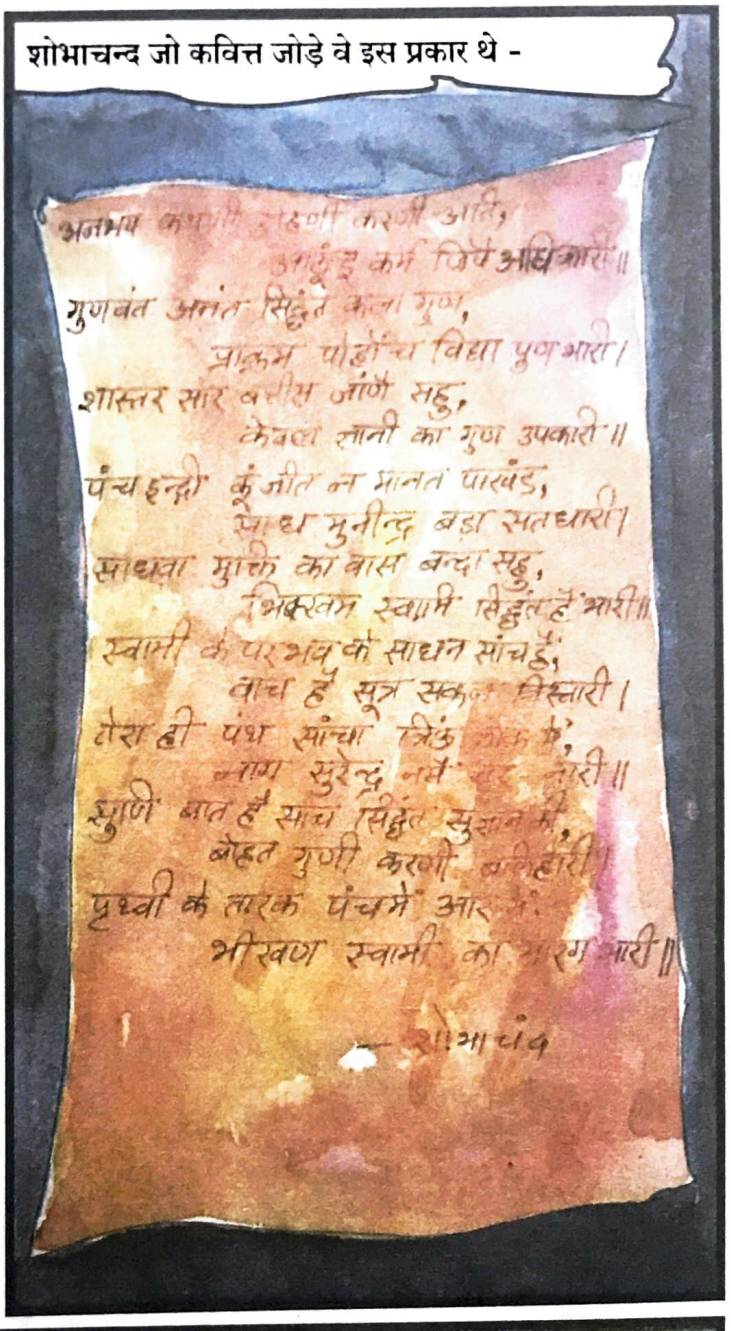

पाली आकर शोभाचन्द बावेचा जी से मिला और उनके पूछने पर यह बताया कि उसने कवित्त जोड़ लिए हैं ।

बावेचा जी का यह सुनना था कि वे खुश हो गये और शोभाचन्द को लेकर वे तेरापंथी श्रावकों की दुकान पर गये ।

देखिए, ये सेवक हमारे साम्प्रदायिक मतभेदों से परे है । ये भीखण जी से अभी-अभी मिलकर आये हैं । इन्होंने उन्हें जैसा देखा है, वैसा ही बतायेंगे ।

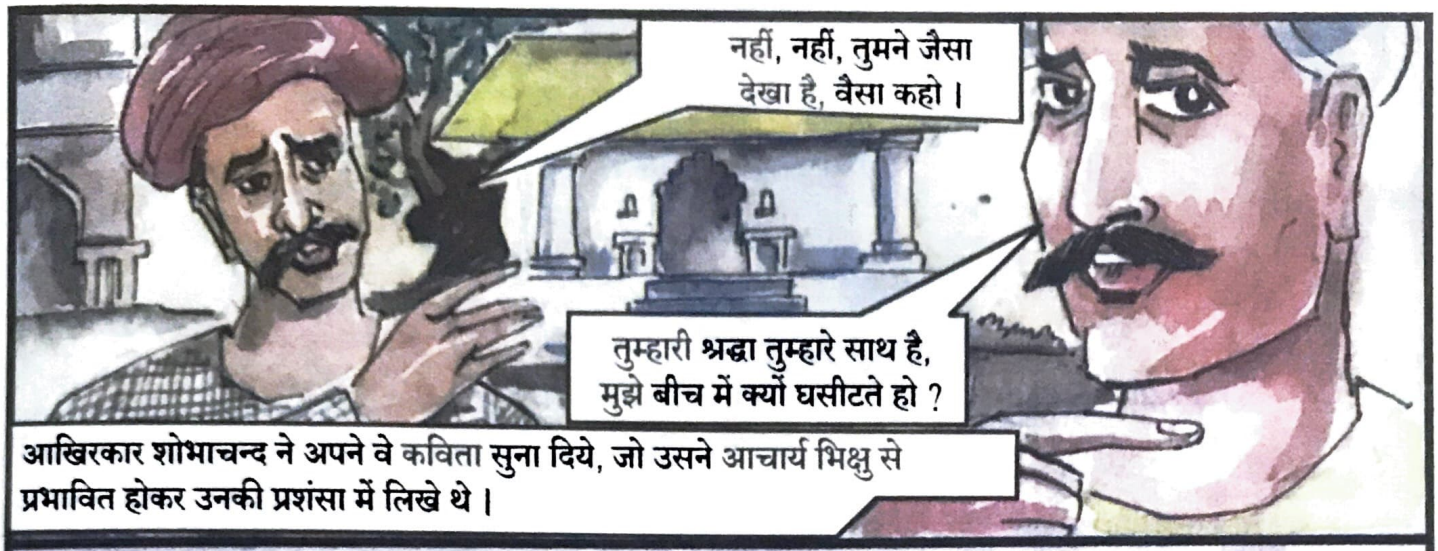

नहीं, नहीं, तुमने जैसा देखा है, वैसा कहो ।
तुम्हारी श्रद्धा तुम्हारे साथ है, मुझे बीच में क्यों घसीटते हो ?
आखिरकार शोभाचन्द ने अपने वे कविता सुना दिये, जो उसने आचार्य भिक्षु से प्रभावित होकर उनकी प्रशंसा में लिखे थे ।

बावेचा जी तो दंग रह गये और चुपचाप वहां से खिसक गये ।
तेरापंथी भाई अपने गुरु की सच्ची प्रशंसा सुनकर बहुत खुश हुए और शोभाचन्द को २०-२५ रूपये दिए ।

आचार्य भिक्षु से एक बार एक व्यक्ति ने पूछा -
भीखण जी ! साधु कौन और असाधु कौन ? कृपया भेद स्पष्ट करें ।
एक अचक्षु व्यक्ति ने वैद्य से कहा - "मैं अंधा हूँ, देख नहीं सकता । कृपया, यह बतायें कि इस शहर में सवस्त्र कितने व्यक्ति हैं और नग्न कितने ?

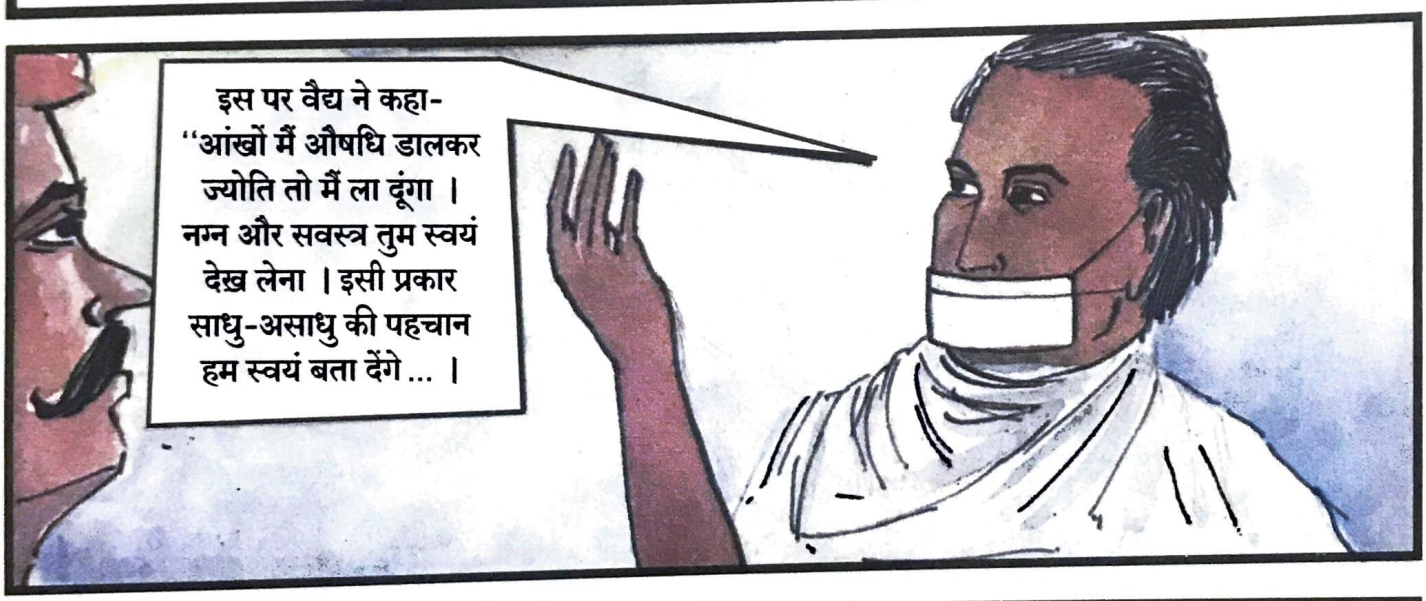
इस पर वैद्य ने कहा- "आंखों मैं औषधि डालकर ज्योति तो मैं ला दूंगा । नग्न और सवस्त्र तुम स्वयं देख लेना । इसी प्रकार साधु-असाधु की पहचान हम स्वयं बता देंगे ... ।

... परन्तु परीक्षा कर पहचानना तुम्हारा काम है । किसी का नाम बताना झगड़ा मोल लेना है ।

पुर, भीलवाड़ा के बीच में आचार्य भिक्षु एक वृक्ष के नीचे बैठे पीछे आने वाले सन्तों की प्रतीक्षा कर रहे थे । सामने से एक भाई जयपुर की तरफ से आया । वंदना की, और पूछा ।
आपका नाम क्या है ?
भीखण ।

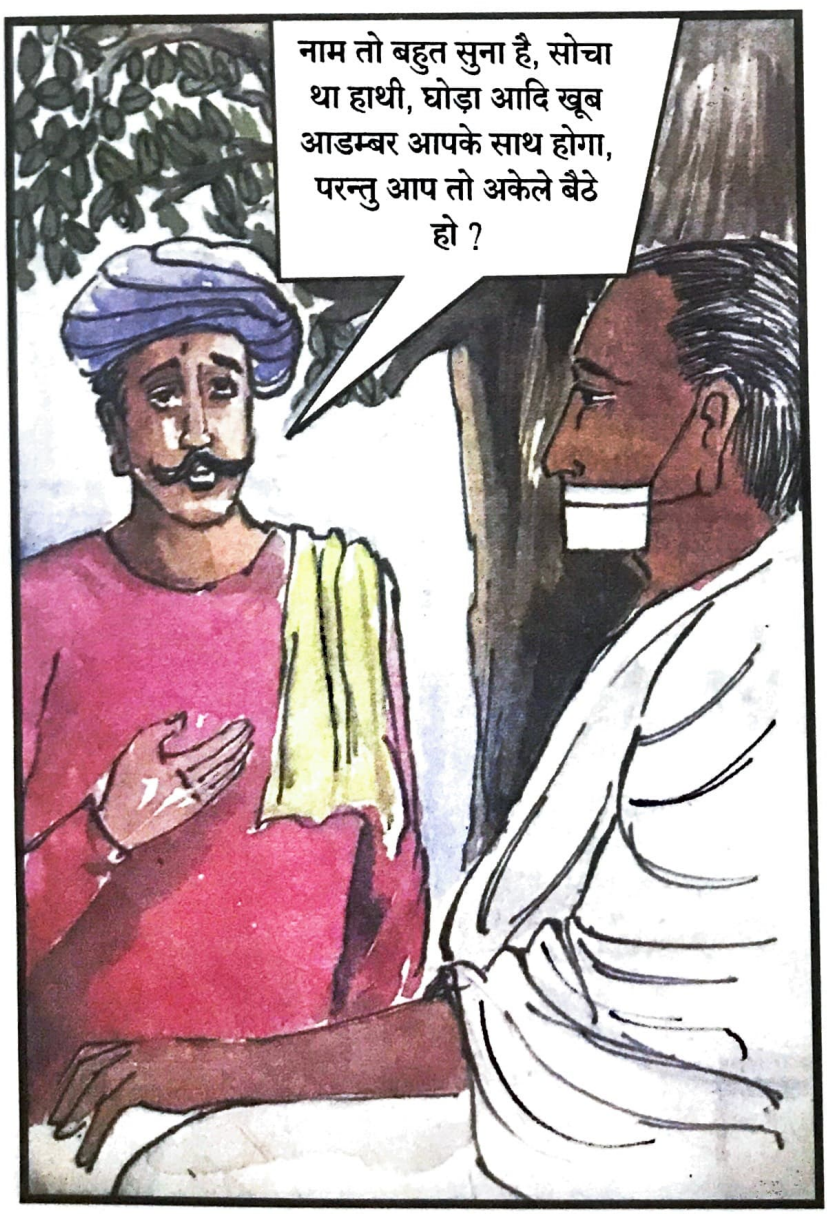
नाम तो बहुत सुना है, सोचा था हाथी, घोड़ा आदि खूब आडम्बर आपके साथ होगा, परन्तु आप तो अकेले बैठे हो ?

आडम्बर नहीं है, यही सच्चे सन्तों की गरिमा है ।

भीखण जी ! तुम लोगों को त्याग करवाते हो, वे यदि उन्हें तोड़ देते हैं तो पाप की भागीदारी भी तुम्हारी हुई ।

नहीं, किसी व्यक्ति ने सौ रुपयों का कपड़ा खरीदा, भाव बढ़ने से उसे २०० रुपयों में बेचा । अब १०० रुपयों का फायदा तो उसे ही हुआ ।

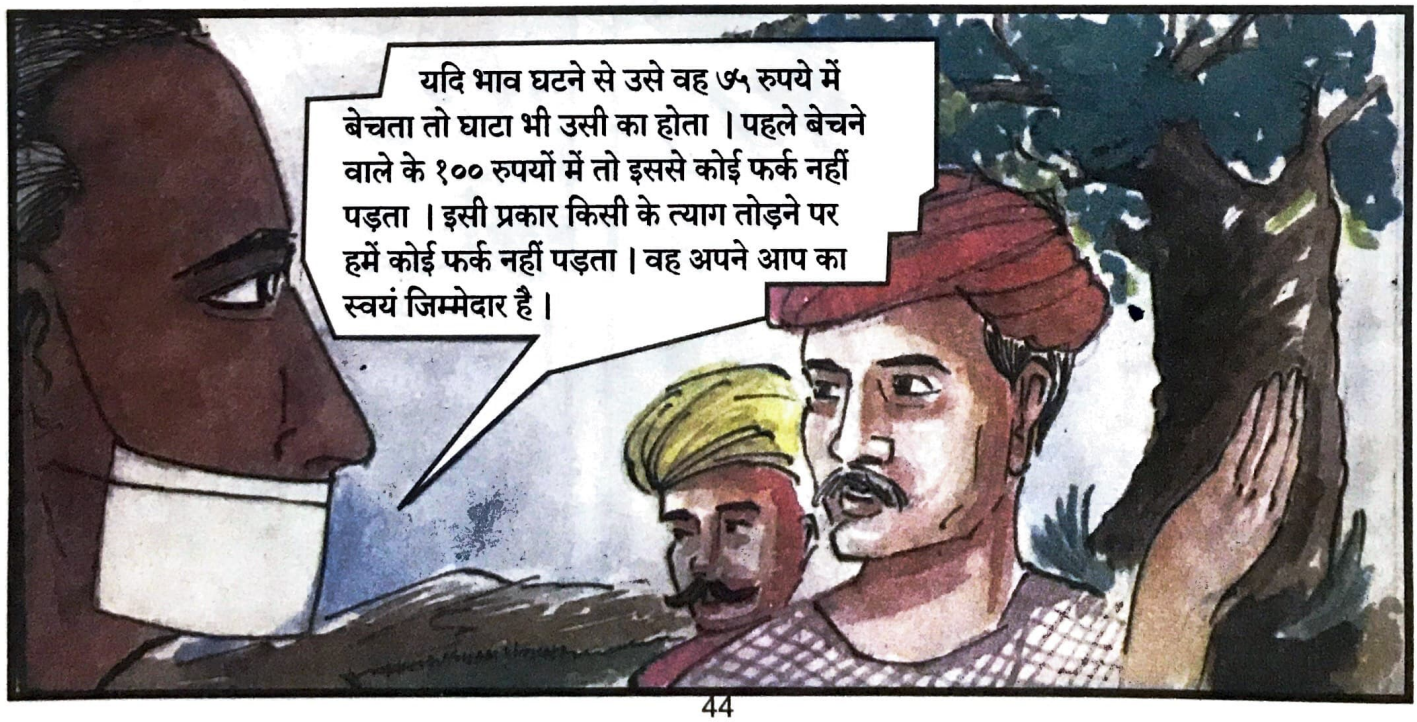
यदि भाव घटने से उसे वह ७५ रुपये में बेचता तो घाटा भी उसी का होता । पहले बेचने वाले के १०० रुपयों में तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । इसी प्रकार किसी के त्याग तोड़ने पर हमें कोई फर्क नहीं पड़ता । वह अपने आप का स्वयं जिम्मेदार है ।

लोग आप में अवगुण बहुत निकालते हैं ?
भई, ये तो मेरे लिए अच्छा ही है । कुछ अवगुणों को मैं खोजता हूँ और कुछ वे खोज देते हैं । फिर मुझे उन्हें सुधारने का मौका मिलता है।

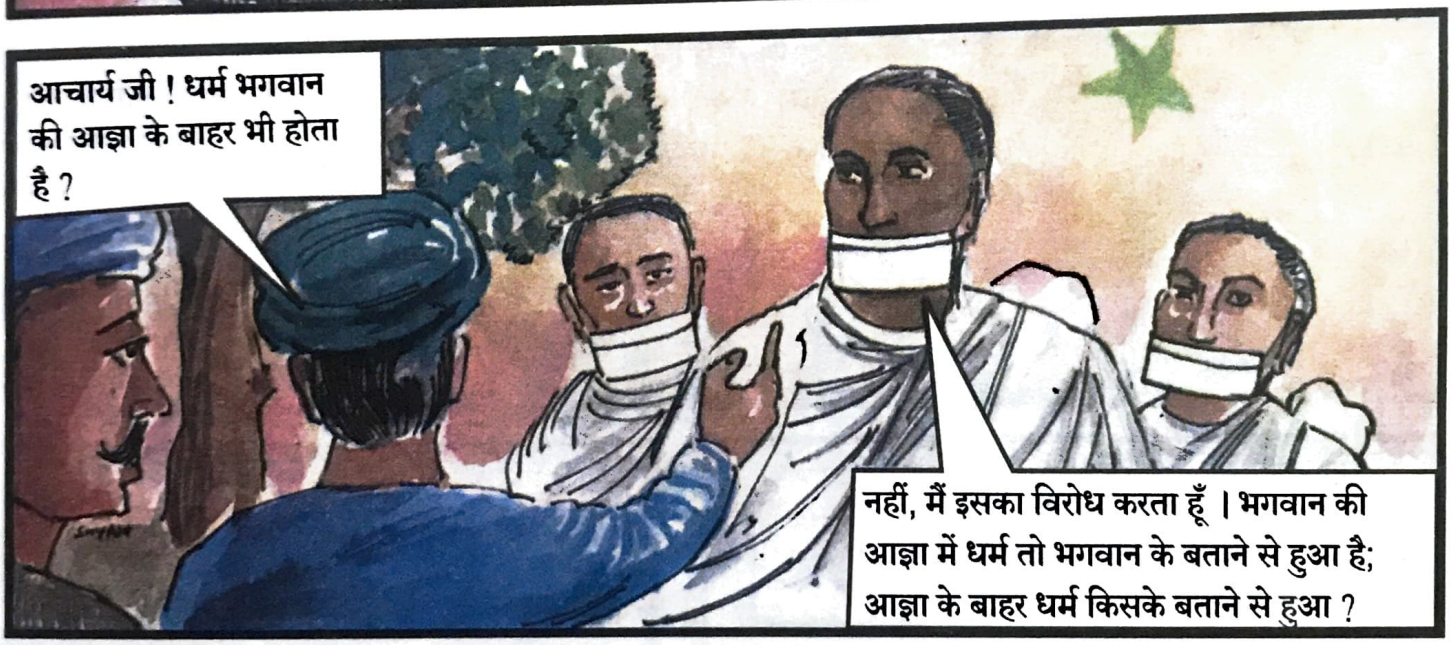
आचार्य जी ! धर्म भगवान की आज्ञा के बाहर भी होता है ?
नहीं, मैं इसका विरोध करता हूँ । भगवान की आज्ञा में धर्म तो भगवान के बताने से हुआ है; आज्ञा के बाहर धर्म किसके बताने से हुआ ?

किसी व्यक्ति की पगड़ी चोरी हो गई । एक व्यक्ति की पगड़ी अपने से मिलती-जुलती देखकर उससे पूछा कि यह कहाँ से खरीदी ? यदि वह सच्चा है तो दुकान का नाम बताकर निर्दोष हो जायेगा, यदि चोर है तो क्या बतायेगा ? इसी तरह से आज्ञा में धर्म है यह तो आगमों से प्रमाणित किया जा सकता है ; लेकिन आज्ञा के बाहर धर्म है, यह कहाँ से प्रमाणित करोगे ?

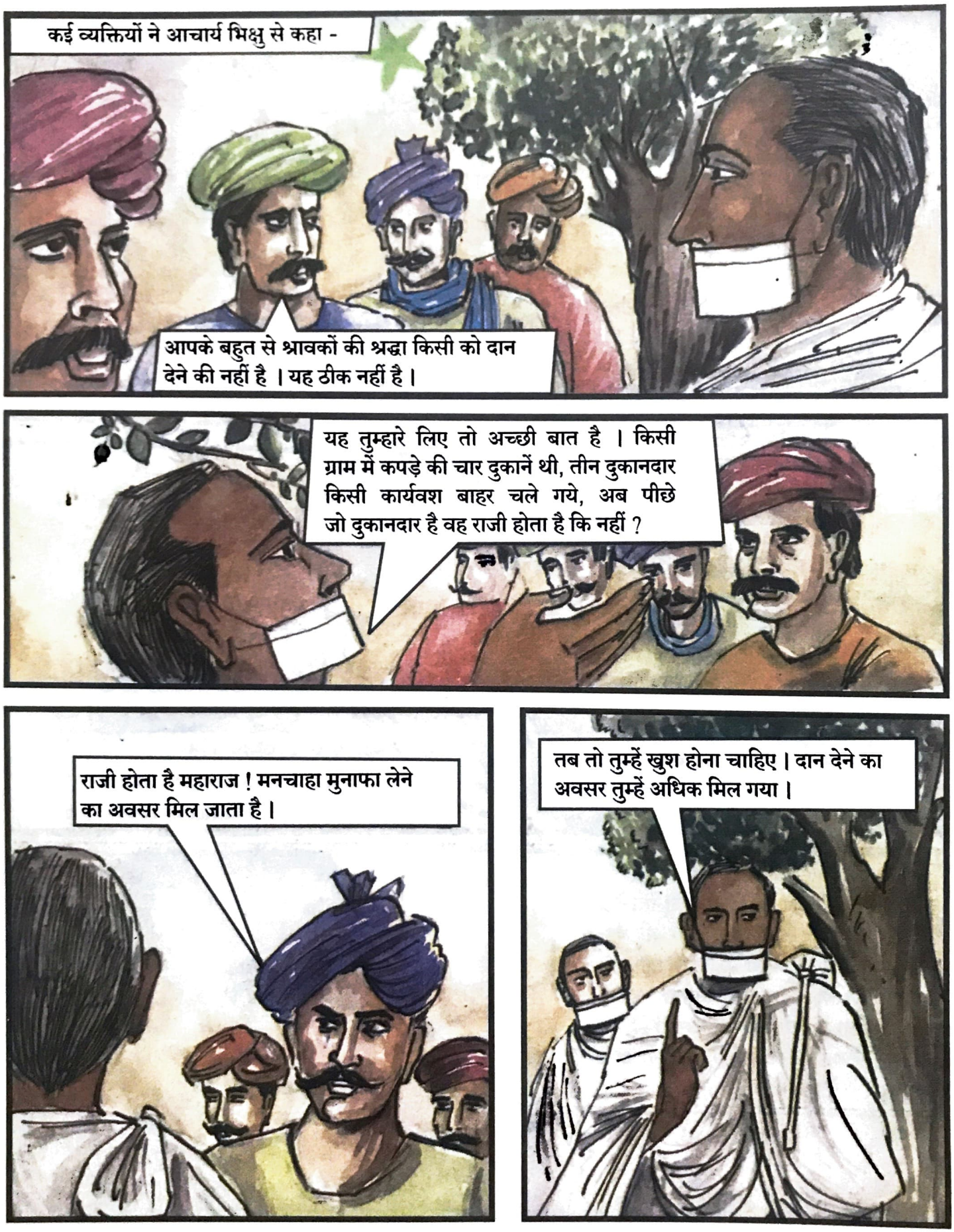
कई व्यक्तियों ने आचार्य भिक्षु से कहा -
आपके बहुत से श्रावकों की श्रद्धा किसी को दान देने की नहीं है । यह ठीक नहीं है ।
यह तुम्हारे लिए तो अच्छी बात है । किसी ग्राम में कपड़े की चार दुकानें थी, तीन दुकानदार किसी कार्यवश बाहर चले गये, अब पीछे जो दुकानदार है वह राजी होता है कि नहीं ?
राजी होता है महाराज ! मनचाहा मुनाफा लेने का अवसर मिल जाता है ।
तब तो तुम्हें खुश होना चाहिए । दान देने का अवसर तुम्हें अधिक मिल गया ।

भीखण जी, आप कहते हैं कि बकरे को बचाने वाले को, बकरे के जीवन में किया जाने बाला पाप लगता रहेगा ।
मेरी ऐसी मान्यता है ही नहीं । मेरा कहना है- असंयति जीव को बचाने वाले को असंयम जीवन सम्बन्धी अनुमोदन उसी क्षण लग गया, बाद में नहीं ।

एक बार एक अन्य व्यक्ति ने आचार्य भिक्षु से कहा -
गुरु जी ! जीव नीचे नरक में कैसे जाता है ?
पानी में पत्थर छोड़ो तो उसे नीचे कौन ले जाता है ?
उसका भारीपन !

इसी तरह जीव का दुष्कर्म उसे नीचे ले जाता है ।

जीव ऊपर स्वर्ग में कैसे जाता है ?
पानी में लकड़ी का टुकड़ा डालने पर वह ऊपर कैसे आ जाता है ?
अपने हल्केपन के कारण !

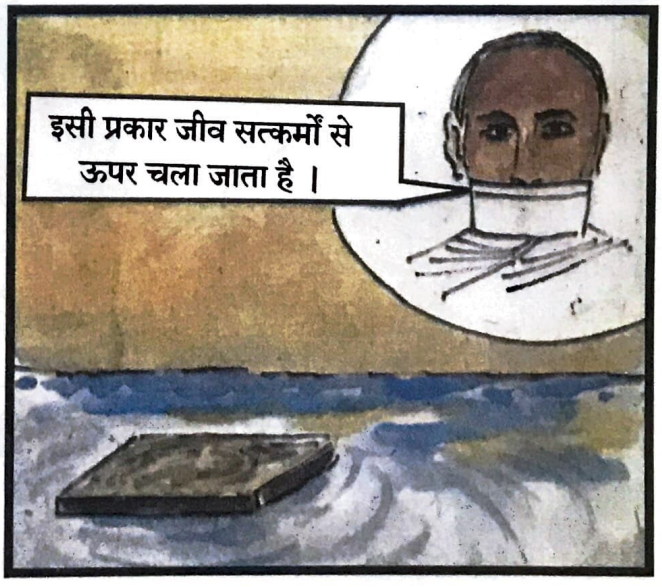
इसी प्रकार जीव सत्कर्मों से ऊपर चला जाता है ।

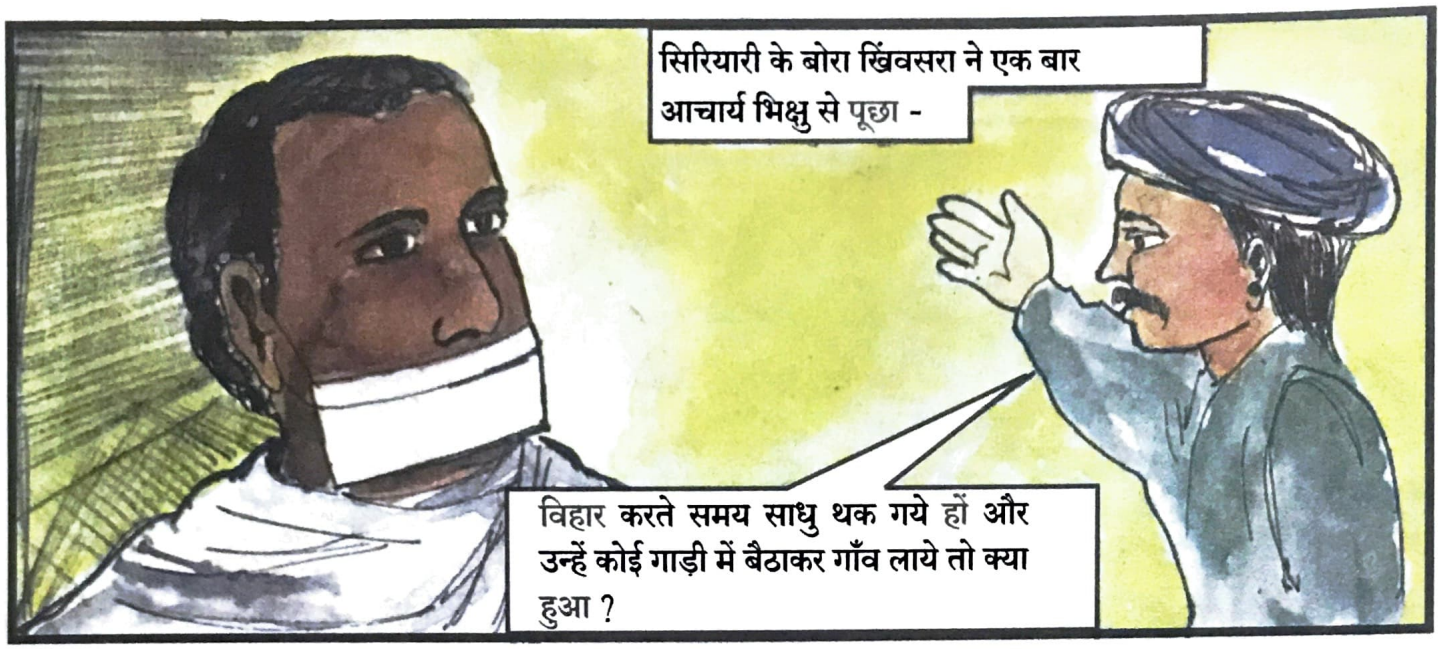
सिरियारी के बोरा खिंवसरा ने एक बार आचार्य भिक्षु से पूछा -
विहार करते समय साधु थक गये हों और उन्हें कोई गाड़ी में बैठाकर गाँव लाये तो क्या हुआ ?

और गधेपर बैठाकर लाये तो क्या हुआ ?
गधे की बात क्यों करते हैं ?

मुनि के लिए दोनों ही समान हैं ।

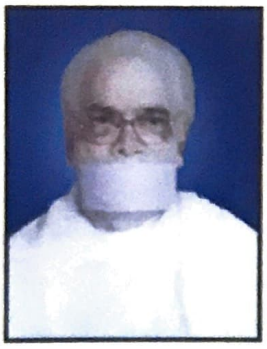

मुनि श्री सुमेरमल जी (लाडनूं)

जन्म - चैत्र शुक्ला 14, सं. 1989, लाडनूं (राज.),
दीक्षा - माघ शुक्ला 7, सं 1998, सरदारशहर (राज.)
आचार्य श्री तुलसी द्वारा
अग्रगण्य - ज्येष्ठ कृष्णा 3 सं. 2010, भीनासर (राज.)
सम्बोधन - तेरापंथ दर्शन मनीषी - माघ शुक्ला ६ सं. 2060, जलगांव (महाराष्ट्र)
विशेष : तीन मुमुक्षुओं को गुरु - निर्देश से दीक्षा प्रदान

मुनि श्री द्वारा लिखित चित्रकथा माला

अखूट खजाना

जैन धर्म में सामायिक एवं संत दर्शन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । इसके महत्व को प्रतिपादित करने वाले दो कथानक इस चित्रकथा में लिये गये हैं ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-1

तेरापंथ के प्रवर्तक, महान् संत, शिथिलाचार के विरुद्ध शंखनाद फूंकने वाले आचार्य भिक्षु के जन्म, स्थानकवासी परंपरा में दीक्षा व अभिनिष्क्रमण का चित्रण है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-2

अभिनिष्क्रमण के बाद विरोध का स्वर बुलंद हुआ, केलवा की अंधेरी ओरी में तेरापंथ की विधिवत् स्थापना हुई । आहार पानी व स्थान की समस्या सामने आई, इन स्थितियों का सजीव निदर्शन है ।

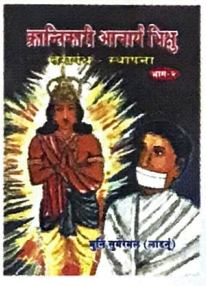

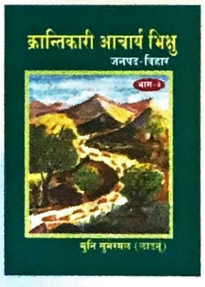

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-3

आचार-संहिता का कड़ाई से पालन, सिद्धान्त प्रतिपादन की कुशलता, असंकीर्णता, न्यायप्रियता, संघर्ष में भी शीतलता एवं संतुलन, प्रत्युत्पन्न मति, विनोद प्रियता जैसी विशेषताओं को प्रकट करते आचार्य भिक्षु के जीवन संस्मरणों का गुंफन है।

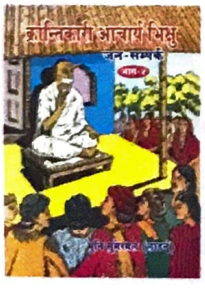

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-4

आचार्य भिक्षु हर बात को कथानाक व दृष्टांत के माध्यम से हरेक के गले उतार देते थे । उनका जनसंपर्क व्यापक था । ठाकुर (जागीरदार) से लेकर ठेट किसान तक उनसे प्रभावित थे । प्रस्तुत भाग में उनके जनसंपर्क की एक झलक प्रदर्शित की गई है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-5

आचार्य भिक्षु आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे । उनके पास जो कोई भी आता वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । विरोधी लोग भी उनकी विद्वता, साधनाशीलता कुशल वक्तृत्व एवं कष्ट सहिष्णुता का लोहा मानते थे । इन सबकी झलक इस भाग में है ।

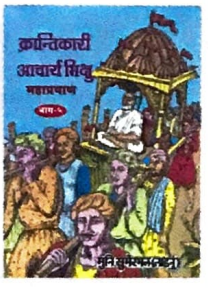

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-6

तेरापंथ के दूसरे आचार्य श्री भारमल जी आचार्य श्री भिक्षु के सर्वात्मना समर्पित थे । तीसरे आचार्य श्री रायचन्द जी बड़े पुण्यवान आचार्य थे ।
दोनों स्वामीजी के हाथों दीक्षित हुए । प्रस्तुत चित्र कथा में दोनों के जीवन की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है ।

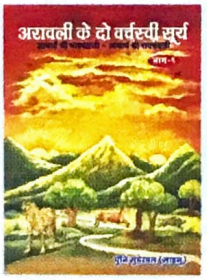

मुनि श्री की अन्य कथा पुस्तकें ।

1. परीलोक
2. बुद्धिलोक
3. नीतिलोक
4. प्रज्ञालोक
5. सत्यलोक
6. दिव्यलोक
7. नारीलोक
8. कर्मलोक
9. उपकार
10. संस्कार
11. सप्त व्यसन
12. विद्याधर श्रीपाल
13. जादूगर श्रीकांत
14. नैतिक कहानियां भाग-1
15. नैतिक कहानियां भाग - 2 आदि - आदि ।

आशीर्वचन

चित्रकथा साहित्य की आकर्षक विधा है । यह आबालवृद्ध सबके मन को भाती है । भावी पीढ़ी के लिए तो यह संस्कार-निर्माण की कुन्जी बन सकती है । चित्रकथाएं बहुत लिखी जाती हैं, पर जो सुरुचिपूर्ण, संस्कार निर्मात्री और संघीय निष्ठा जगाने वाली चित्रकथा हो, उसका महत्त्व ही अलग है, "क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु" चित्रकथा हमारे संघीय इतिहास को उजागर करती है । संस्कार-निर्माण की दृष्टि से भी उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है । इनमें वर्णित आचार्य भिक्षु के प्रेरक जीवन प्रसंग पाठकों के लिये बोधपाठ का काम करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

मुनि सुमेर (लाडनूं) इतिहास वेत्ता तो है ही, वह आज की भाषा में आज के तरीके से इतिहास लेखन के मर्म को भी पहचानता है । उसकी संघनिष्ठा और समाज में संघीय संस्कार भरने का कौशल बेजोड़ है । कलकत्ता महानगर का पंचवर्षीय प्रवास इसका साक्षी है । अहमदाबाद में भी वह सुनियोजित रूप में सतत काम कर रहा है । अन्यान्य कार्यों के साथ संघ के लिये उपयोगी साहित्य चित्रकथा के निर्माण का सिलसिला सिद्ध करता है कि वह समय-नियोजन की कला में भी निष्णात है ।

विशेष उद्देश्य के साथ लिखी गई ये चित्रकथाएं पाठकों के आकर्षण को बनाये रखती हुई बच्चों के संस्कार निर्माण में उपयोगी बने, यही मंगल भावना है।

२४ जनवरी, १९९७

गणाधिपति तुलसी

आचार्य महाप्रज्ञ